



तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“
भिक्षु वाणी

जीव विमासी जोय तू, विषय म राच गिवा।
थोड़ा सुखों रे कारणे, मूरख घणा म हार।।

हे जीव! तू विचार कर देख, हे मूढ़!
विषय में आसक्त मत बन। थोड़े सुखों
के लिए बहुत सुखों को मत गवां।

—आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

● वर्ष 27 ● अंक 52 ● 28 सितम्बर - 04 अक्टूबर 2026



प्रत्येक सोमवार

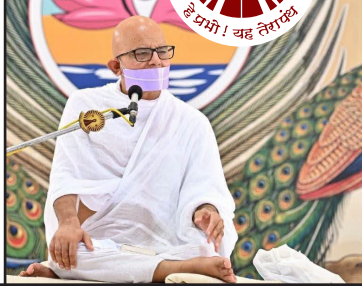
● प्रकाशन तिथि : 26-09-2026 ● पेज 20

₹ 10 रुपये



मर्यादा और एकांतवास
से सुरक्षित रहता है
संयम : आचार्यश्री
महाश्रमण

पेज 02



जीवन की बस का ड्राइवर है
'कार्मण शरीर', आत्म-बल
की ब्रेक से ही रुकेगा
प्रमाद : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 19

Address
Here

आचार्यश्री महाश्रमण जी के श्रीमुख से 6 साधु-साध्वी व 1 समणी दीक्षा संपन्न

'तुलसी' के त्याग व 'महाप्रज्ञ' के विनय की धरोहर है विकास महोत्सव : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यश्री ने वर्ष 2036 में 'गुरुदेव तुलसी आचार्य पद शताब्दी' व 'आचार्य महाप्रज्ञ दीक्षा शताब्दी' मनाने की ऐतिहासिक घोषणा

लाडनूँ।

20 सितम्बर, 2026

लाडनूँ स्थित जैन विश्व भारती में योगक्षेम वर्ष का सुदीर्घ प्रवास कर रहे जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता, अखंड परित्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में ३३वाँ विकास महोत्सव एवं दीक्षा समारोह हर्षोल्लास व गरिमा के साथ सुसंपन्न हुआ। भाद्रपद शुक्ला नवमी के पावन अवसर पर पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से सात मुमुक्षुओं को मुनि, साध्वी व समणी दीक्षा प्रदान की गई, जिससे धर्मसंघ के विकास को नया सोपान मिला।

पावन प्रेरणा: संयम का महत्त्व : दो ऐतिहासिक शताब्दियों का ऐलान—

१. संयम और अगारत्व का त्याग : आचार्यश्री ने अपने मुख्य ओजस्वी उद्बोधन में फरमाया कि धर्म की साधना ही मंगलकारी होती है। आज यह दीक्षा समारोह मानो धर्म के लिए संकल्प ग्रहण करने का समारोह है। इस ३३वें विकास महोत्सव के दिन आज कुल सात दीक्षाएँ हैं। जीव के अनंतकाल के संसार भ्रमण से छुटकारा पाने के लिए अगारत्व (गृहस्थ जीवन) को छोड़कर संयम स्वीकार करना बहुत बड़े त्याग का कार्य होता है।

२. गुरुदेव तुलसी आचार्य पद-प्राप्ति शताब्दी (२०३६) : पूज्यश्री ने ऐतिहासिक संदर्भ देते हुए फरमाया कि आज भाद्रपद शुक्ला नवमी का दिन है। आज से ठीक ५० वर्ष पूर्व परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी ने गंगापुर मेवाड़ में विधिवत तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य पद का दायित्व संभाला था। इस पावन स्मृति में आचार्यश्री ने वर्ष २०३६ ईस्वी में (१० वर्ष पश्चात) 'गुरुदेव श्री तुलसी आचार्य पद-प्राप्ति शताब्दी समारोह' मनाने की ऐतिहासिक घोषणा की।

३. आचार्य महाप्रज्ञ दीक्षा शताब्दी (२०३६) : आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के विकास महोत्सव में

संयम और महात्याग ही
आत्मा को अनंत भवों के
चक्र से मुक्त कराता है। धर्म
की साधना ही जीवन का
सच्चा मंगल है

—आचार्यश्री महाश्रमण

योगदान, त्याग और विनय का स्मरण करते हुए पूज्यश्री ने फरमाया कि उनकी दीक्षा ग्रहण के भी १०० वर्ष संपन्न होने वाले हैं। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने वर्ष २०३६ में 'आचार्य महाप्रज्ञ दीक्षा शताब्दी' भी मनाने का पावन भाव व्यक्त किया।

परिजनों की स्वीकृति और दीक्षा संस्कार की प्रक्रिया :

१. आज्ञा पत्र वाचन व मौखिक स्वीकृति : कार्यक्रम के प्रारंभ में पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष बजरंग जैन ने दीक्षार्थियों के आज्ञा पत्रों का वाचन किया और परिजनों ने आज्ञा पत्र पूज्यश्री के कर-कमलों में समर्पित किए। इसके पश्चात आचार्यश्री ने परिजनों से मौखिक रूप से भी दीक्षा की आज्ञा मांगी, जिस पर सभी परिजनों ने अपने स्थान पर खड़े होकर सहर्ष अपनी सहमति व निवेदन निवेदित किया।

२. अंतिम परीक्षण व आर्षवाणी : आचार्यश्री ने दीक्षार्थियों को अंतिम रूप से अपने निर्णय पर पुनः



विकास महोत्सव के उपलक्ष में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा रचित गीत

प्रभुवर का पावन आधार।
विभुवर की स्मृति का संचार।

गुरुवर तुलसी को करें हम वन्दन बारम्बार।
महाप्रज्ञ गुरु को करें हम वन्दन बारम्बार॥
भाद्रव शुक्ला नवमी का दिन पट्टोत्सव विख्यात।
सर्वाधिक आचार्यकाल का कीर्तिमान प्रख्यात॥१॥

अभय विनय का अतिशय अर्जन तात्त्विक ज्ञान विकास।
आध्यात्मिक आराधना से प्रगटे चित प्रकाश॥२॥

प्रवचन - प्रश्नोत्तर कला में हो नैपुण्य निकाम।
शुभभावों की निरंतरता में बीतें आठों याम॥३॥

चिन्तन-निर्णय कार्यावृत्ति की रहे व्यवस्था ठीक।
सही मार्ग पर सदा प्रगति हो छूटे ना वर लीक॥४॥

सम्यक् दर्शन की विमलता रहे निरन्तर साथ।
अध्यवसायों में विराजें परम शक्तिमय नाथ॥५॥

योगक्षेम वर्ष दूसरा 'महाश्रमण' उपहार।
तेरापंथ संघ में आए नूतन मध्य निखार॥६॥

(लय - नहिं इसो दूसरो महावीर.....)

चिन्तन करने का अवसर दिया। दीक्षार्थियों द्वारा दृढ़ संकल्प दोहराने के बाद पूज्यश्री ने आर्षवाणी का उच्चारण कर ५ मुमुक्षु बहनों व १ मुमुक्षु भाई को साधु-साध्वी दीक्षा तथा १ मुमुक्षु बहन को निर्धारित पाठ से समणी दीक्षा प्रदान की।

३. केशलुंचन व रजोहरण : अतीत की आलोचना के बाद परंपरा अनुसार नवदीक्षित मुनिजी का केशलुंचन आचार्यश्री ने तथा शेष साध्वियों व समणीजी का केशलुंचन साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी द्वारा संपन्न किया गया। तत्पश्चात आचार्यश्री ने नवदीक्षित मुनिजी को रजोहरण तथा साध्वी प्रमुखाजी ने नवदीक्षित साध्वियों को रजोहरण प्रदान किया।

४. ज्ञान, दर्शन, चरित्र का आशीर्वाद : घोषणाओं के उपरांत पूज्यश्री ने सभी नवदीक्षितों को ज्ञान, दर्शन और चरित्र में निरंतर वर्धमान रहने का मंगल आशीर्वाद प्रदान किया तथा संयमयुक्त जीवन

त्याग और विनय की पावन धरोहर: जानिए कैसे शुरू हुआ 'विकास महोत्सव'

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने विकास महोत्सव की पृष्ठभूमि और उसकी स्थापना के रहस्य को उजागर करते हुए फरमाया कि यह महोत्सव दो युगप्रधान आचार्यों के उच्च आदर्शों का फलित है:

१. गुरुदेव तुलसी का त्याग (विसर्जन) : आचार्य श्री तुलसी ने जब स्वप्रेरणा से आचार्य पद का परित्याग (विसर्जन) किया, तब उन्होंने स्पष्ट शब्दों में फरमाया— 'जब मैंने आचार्य पद का परित्याग कर दिया है, तो अब मेरा पट्टोत्सव किस बात का? पट्टोत्सव तो वर्तमान आचार्य (महाप्रज्ञ जी) का मनाया जाना चाहिए।' यदि गुरुदेव तुलसी आचार्य पद का त्याग नहीं करते, तो कदाचित् उनके जीवनकाल तक ही 'पट्टोत्सव' मनाया जाता और उसके बाद वह परंपरा उस रूप में आगे न बढ़ती। उनका यह त्याग ही विकास महोत्सव की नींव बना।

२. आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की अनन्य निष्ठा और विनय : दूसरी ओर, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का कर्तव्य-भाव और अनन्य विनय-भाव भी उतना ही विशाल था। उनके मन में यह भाव आया कि—

'भाद्रव शुक्ला नवमी का दिन संघ की आस्था और संस्कारों से वर्षों से जुड़ा है। इसे यँही कैसे छोड़ा जा सकता है?'

'पट्टोत्सव' से 'विकास महोत्सव' तक का पावन सफर : गुरुदेव तुलसी के त्याग और आचार्य महाप्रज्ञ जी के विनय का ऐसा सुंदर समन्वय बना कि गुरुदेव की भावना का आदर रखते हुए 'पट्टोत्सव' के स्थान पर 'विकास महोत्सव' मनाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया।

पावन निष्कर्ष : यदि गुरुदेव तुलसी आचार्य पद का विसर्जन न करते, तो शायद यह रूप न बनता। उनके त्याग और आचार्य महाप्रज्ञ जी के समर्पण के कारण ही गुरुदेव तुलसी के देवलोकगमन के बाद भी आज भाद्रव शुक्ला नवमी पूरे धर्मसंघ में 'विकास महोत्सव' के रूप में उतनी ही श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाई जा रही है।

जीते हुए यतनापूर्वक आत्मकल्याण की प्रेरणा दी।

नव-दीक्षित साधु-साध्वियों का नया नामकरण : आचार्यश्री महाश्रमण जी ने नव-दीक्षितों को नया संयमी नाम प्रदान किया—

मुमुक्षु बाबूलाल बाफना : मुनि हितकर जी
मुमुक्षु सुमन नाहटा : साध्वी सुपाश्वरप्रभा जी
मुमुक्षु सुमन बैद : साध्वी ओमप्रभा जी
मुमुक्षु अर्चना मेहता : साध्वी अर्चनाप्रभा जी
मुमुक्षु रुचिका मालू : साध्वी धर्मार्थप्रभा जी
मुमुक्षु कोमल भंसाली : साध्वी कोमलप्रभा जी
मुमुक्षु भावना : समणी भक्तिप्रज्ञा जी

(शेष पेज 16 पर)



ठहराव में आसक्ति है, बहने में निर्मलता : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर का 'अनासक्ति से क्या मिलेगा' विषय पर आगमिक पाथेय

लाडनू।

18 सितम्बर, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी योगक्षेम वर्ष के दौरान जन-जन के मानस को निरंतर आध्यात्मिक अभिसिंचन प्रदान कर रहे हैं। सुधर्मा सभा में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के दौरान पूज्य आचार्यश्री ने उत्तरज्ज्ञयणाणि आगम के माध्यम से 'अनासक्ति से क्या मिलेगा' विषय पर सारगर्भित एवं जीवनोपयोगी पाथेय प्रदान किया।

अप्रतिबद्धता और बहते जल सा निर्मल साधु जीवन :

१. प्रतिबद्धता का अर्थ व विवेकपूर्ण विहार : आगमिक जिज्ञासा का समाधान करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि प्रश्न उठता है— अप्रतिबद्धता से जीव क्या प्राप्त करता है? प्रतिबद्धता का अर्थ है किसी व्यक्ति, स्थान, कुल, गाँव या नगर से बँध जाना। साधु को हर प्रकार के भीतरी राग भाव और प्रतिबद्धता से मुक्त (अप्रतिबद्ध) रहना चाहिए। शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी विशेष



अंतिम श्वास तक संयम और तप की अखंड ज्योति जलती रहे, तो यही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है

—आचार्यश्री महाश्रमण

अपेक्षा को छोड़कर साधु को किसी एक स्थान से आबद्ध नहीं होना चाहिए।

२. चारित्र विशुद्धि व धर्म प्रचार : पूज्यश्री ने उदाहरण देते हुए फरमाया कि जिस प्रकार बहता हुआ पानी सदा निर्मल रहता है, उसी प्रकार साधु को भी अपने कल्प (मर्यादा) के अनुसार निरंतर विचरते रहना चाहिए, जिससे उसका चारित्र निष्कलंक व निर्मल बना रहे। एक ही स्थान पर लंबे समय तक टिके रहने से व्यक्ति, स्थान अथवा आहार-पानी के प्रति आसक्ति उत्पन्न हो सकती है। साथ ही, एक स्थान पर जमे रहने से अन्य क्षेत्रों के लोगों को धर्म श्रवण का अवसर नहीं मिल पाता। अतः व्यापक धर्म प्रचार की दृष्टि से भी स्थान परिवर्तन आवश्यक है।

निःसंगता, मर्यादावली और ज्ञान दान का संदेश :



बछड़ा, रस्सी और खूंट : जीवन की सबसे बड़ी बेड़ी का सच!

आचार्यश्री ने 'प्रतिबद्धता' (आसक्ति व बंधन) के भाव को समझाने के लिए एक अत्यंत सरल एवं मार्मिक उदाहरण प्रस्तुत किया—

१. बछड़े और खूंट का दृष्टांत : आचार्य श्री ने बताया कि जिस प्रकार एक बछड़े को रस्सी से खूंट से बाँध दिया जाता है, तो वह उस खूंट से 'प्रतिबद्ध' हो जाता है।

२. सीमा का बंधन : उस बंधन के कारण बछड़ा एक निश्चित दायरे से बाहर नहीं जा सकता। उसकी पूरी दुनिया केवल उस खूंट के इर्द-गिर्द सिमट कर रह जाती है।

३. आध्यात्मिक संदेश : ठीक इसी तरह, जब मनुष्य संसारी वस्तुओं, व्यक्तियों या मोह-माया में बँध जाता है, तो वह भी अपनी चेतना की असीम सीमाओं को भूलकर सीमित हो जाता है। यह आसक्ति ही उसके आध्यात्मिक विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

४. निष्कर्ष : आचार्यश्री ने इस प्रसंग के माध्यम से यह पावन संदेश दिया है कि मोह और आसक्ति व्यक्ति की आंतरिक स्वतंत्रता को छीन लेती है। सच्चा साधक वही है जो इन अदृश्य बंधनों को पहचानकर इनसे मुक्त होने का प्रयास करे।

१. अनासक्ति से निःसंगत्व की प्राप्ति : शास्त्र का उद्धरण देते हुए पूज्यश्री ने फरमाया कि अप्रतिबद्धता से आत्मा को निःसंगता प्राप्त होती है। जो बाह्य संसर्गों से मुक्त रहता है, उसके भीतर भी निःसंग भाव जागृत रहता है। श्रीमज्जयाचार्य तथा अन्य पूर्वाचार्यों ने भी अपनी कृतियों के माध्यम से साधुओं

को किसी भी प्रकार का 'संग' न रखने की बारंबार प्रेरणा दी है।

२. संयम की अखंड ज्योति व मर्यादा का वाचन : आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा देते हुए फरमाया कि जीवन के अंतिम श्वास तक संयम की अखंड ज्योति जलती रहे और यथासंभव तप की ज्योति भी प्रज्वलित रहे, तो यह मानव जीवन

सरोवर, राजहंस और आचार्यश्री का वह संदेश!

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कृतज्ञता (Gratitude) और उपकार के महत्व को एक सुंदर राजहंस (Swan) के उदाहरण के माध्यम से समझाया:

१. राजहंस और सरोवर : आचार्यश्री ने एक संस्कृत श्लोक का उल्लेख किया, जिसमें एक राजहंस की भावना को दर्शाया गया है। राजहंस उस सरोवर का कभी बुरा नहीं सोच सकता जहाँ उसने लंबे समय तक कमलनाल का भक्षण किया है और जिसका जल पिया है।

२. कृतज्ञता का भाव : यह दृष्टांत सिखाता है कि जिस स्थान, समुदाय, या गुरुओं के सानिध्य से व्यक्ति ने संस्कार, शिक्षा, और जीवन की दिशा प्राप्त की है, उसके प्रति हमेशा कृतज्ञ रहना चाहिए। जो व्यक्ति प्राप्त किए गए उपकारों को भूल जाता है, वह अपने व्यक्तित्व की महानता खो देता है।

३. आध्यात्मिक संदेश : आचार्यश्री ने इसके माध्यम से साधकों को प्रेरित किया है कि वे अपने संघ और गुरुजनों के प्रति सदा कृतोपकारी (उपकार मानने वाले) रहें। जिस प्रकार हंस सरोवर के प्रति अपना प्रेम और निष्ठा बनाए रखता है, उसी प्रकार एक साधक को भी अपने मूल स्रोत और आधार के प्रति समर्पित रहना चाहिए। यह प्रसंग हमें सिखाता है कि जीवन में 'प्राप्ति' से बड़ी बात उस 'प्राप्ति' के प्रति सम्मान रखना है।

की सबसे बड़ी सफलता और उपलब्धि है। मर्यादावली व हाजिरी का वाचन भी साधु-संतों को इसी पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। साधु संघ में रहकर जो ज्ञान अर्जन करते हैं, उसे यथासंभव दूसरों को बाँटने का प्रयास करना चाहिए, ताकि एकाग्रचित्त होकर अनासक्त भाव से विचरण किया जा सके।

पूज्य प्रवर की 'एकान्तवास से क्या मिलेगा' पर ओजस्वी अमृत देशना

मर्यादा और एकांतवास से सुरक्षित रहता है संयम : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यश्री ने फरमाया—

एकांत और जनसंपर्क दोनों का अपना महत्त्व

लाडनू।

19 सितम्बर, 2026

जन-जन को आध्यात्मिक अभिसिंचन प्रदान करने वाले जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में श्रद्धालुओं को अमृत देशना प्रदान की। आज के निर्धारित विषय 'एकान्तवास से क्या मिलेगा?' पर उत्तरज्ज्ञयणाणि आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान किया।

साधना के दो प्रकार और रुचि के अनुसार कार्य की महत्ता :

१. दो प्रकार की साधु साधना : अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि साधु दो प्रकार के हो सकते

वेश महिला का, पहचान पुरुष की.. और गुरुदेव तुलसी का वह निर्णय?

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आचार्य श्री तुलसी के जीवन से जुड़ा एक प्रेरणादायी और व्यावहारिक प्रसंग साझा किया:

१. घटना का संदर्भ : यह प्रसंग गंगाशहर के निवासी छलानी जी से संबंधित है। जब परम पूज्य गुरुदेव तुलसी बीदासर में विराज रहे थे, तब छलानी जी असे दर्शन हेतु पधारे।

२. विशेष स्थिति : छलानी जी मूलतः पुरुष थे, किंतु वे सदैव महिलाओं का वेश धारण करके ही रहते थे।

३. गुरुदेव का अति-सावधानी भरा विवेक : जब वे दर्शन के लिए आए, तो गुरुदेव तुलसी ने मर्यादा की सूक्ष्मता का ध्यान रखा। यद्यपि वे जानते थे कि छलानी जी पुरुष हैं, फिर भी बाह्य

रूप-रंग को देखते हुए उन्होंने तुरंत निर्देश दिया कि उनके पास कोई अन्य साधु अनिवार्य रूप से उपस्थित रहे और वे अकेले (एकांत में) न बैठें।

पावन प्रेरणा एवं निष्कर्ष :

१. लोक-व्यवहार का ध्यान : यह सावधानी इसलिए बरती गई ताकि स्थूल व्यवहार में किसी भी प्रकार का गलत संदेश या प्रतीति न फैले।

२. बाह्य निमित्तों से सतर्कता : वेश और बाह्य परिस्थितियों के कारण मर्यादा का पालन करना अनिवार्य था।

३. संयम की सुरक्षा : यह घटना सिखाती है कि आंतरिक पवित्रता के साथ-साथ बाह्य लोक-मर्यादा के प्रति सतर्क रहना भी संयमी जीवन का मूल आधार है।

हैं। एक वे साधु जो जनसंपर्क से प्रायः या पूर्णतया निवृत्त रहते हुए अपनी व्यक्तिगत साधना में ही समय लगाना चाहते हैं। उन्हें लोगों से मिलने, व्याख्यान देने या प्रेरणा देने आदि से मतलब नहीं होता, वे एकांत में रहकर साधना करने वाले होते हैं। आज भी ऐसे साधु मिल सकते हैं जो गुफाओं आदि में रहकर साधना करते हैं।

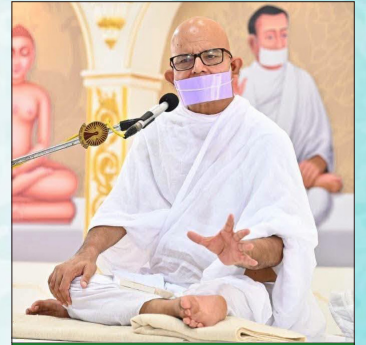
२. जनसंपर्क व व्यक्तिगत रुचि : दूसरे साधु वे होते हैं जो समाज में रहने

वाले लोगों को व्याख्यान सुनाने वाले, प्रेरणा देने वाले व संपर्क करने वाले होते हैं। ऐसे कार्यों में भी उनका समय लगता है। यह अपनी व्यक्तिगत रुचि या परिस्थिति है कि कोई साधु किस प्रकार की साधना करता है। रुचि के अनुरूप यदि कार्य मिलता है तो आदमी उसे बहुत अच्छे ढंग से कर लेता है, जबकि रुचि के प्रतिकूल कार्य मिल जाए तो उसमें मन लगे या न भी लगे। **(शेष पेज 17 पर)**



सात्विक और धार्मिक चित्र आँखों के सामने हों, तो भीतर में शुद्ध भावों का संचार होता है

—आचार्यश्री महाश्रमण



भाद्रव मास : धर्मसंघ की पावन धरोहर

परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि 'तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में भाद्रव का महीना ऐतिहासिक और आध्यात्मिक स्मृतियों का एक पवित्र केंद्र है।'

महाप्रयाण (निर्वाण) तिथियाँ : धर्मसंघ को अपनी साधना और तप से सिंचित करने वाले आचार्यों के देवलोकगमन की स्मृतियाँ:

- १. भाद्रव कृष्ण द्वादशी :** परम पूज्य जयाचार्य का महाप्रयाण
- २. भाद्रव शुक्ला छठ :** परम पूज्य कालूराणी का महाप्रयाण
- ३. भाद्रव शुक्ला द्वादशी :** परम पूज्य डालराणी का महाप्रयाण
- ४. भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी :** परम पूज्य आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण (वरमोत्सव)

पदारोहण एवं विशेष तिथियाँ : संघ-संचालन और आध्यात्मिक नेतृत्व के ऐतिहासिक मील के पथः

- १. भाद्रव शुक्ला तीज :** गुरुदेव तुलसी का युवाचार्य पद पदरोहण
- २. भाद्रव शुक्ला नवमी :** गुरुदेव तुलसी का आचार्य पद पदरोहण
- ३. भाद्रव शुक्ला द्वादशी :** आचार्य श्री महाश्रमण जी का युवाचार्य पद पदरोहण
- ४. भाद्रव शुक्ला पूर्णिमा :** आचार्य श्री कालूराणी का आचार्य पद पदरोहण

—आचार्यश्री महाश्रमण जी को 'महाश्रमण' पद —साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा जी को 'महाश्रमणी' पद अर्पण



तपस्विनी चाहत संचेती : परिचय

तपस्विनी : चाहत संचेती

उम्र : 6 वर्ष

तपस्या : अट्टाई

सुपुत्री : सुमित संचेती एवं नेहा संचेती

सुपौत्री : लक्ष्मीपत एवं किरण देवी संचेती

निवासी: मोमासर प्रवासी: बालोतरा एवं सूरत

इतनी कम उम्र में अट्टाई जैसी कठिन तपस्या कर नन्ही चाहत ने अपने संस्कार, संकल्प और आत्मबल का अद्भुत परिचय दिया है।

संक्षिप्त खबर

नेत्रदान पखवाड़े के अंतर्गत तुलसी सेवा संस्थान में जागरूकता अभियान

श्रीडूंगरगढ़। तेरापंथ युवक परिषद् श्रीडूंगरगढ़ द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के 'Vision for Visionless 2.0' अभियान के अंतर्गत चल रहे राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़े के अंतर्गत तुलसी सेवा संस्थान में नेत्रदान जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित नर्सिंग स्टाफ एवं तकनीकी स्टाफ, प्रशासक सूर्य प्रकाश गांधी सहित डॉक्टर एन.पी. मारू, प्रवीण कुमार गुप्ता, अरिहंत बैद, राजकुमार सुथार एवं रामानंद सिद्ध ने नेत्रदान के महत्व को समझते हुए समाज में अधिक से अधिक लोगों को नेत्रदान के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद् श्रीडूंगरगढ़ के अध्यक्ष विक्रम मालू एवं नेत्रदान प्रवृत्ति सलाहकार अशोक जी झाबक ने नेत्रदान की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष चमन श्रीमाल ने किया।

Plug—In with Monk का आयोजन

कटक। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि भव्य कुमार जी एवं मुनि जयेशकुमार जी के साथ तेरापंथ कन्या मंडल एवं तेरापंथ किशोर मंडल, कटक द्वारा 'Plug-in with Monk' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य जिज्ञासुओं को तीनों मुनिश्री के सान्निध्य में अपने मन में उठने वाले जिज्ञासापूर्ण एवं जीवनोपयोगी प्रश्नों के समाधान प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना था।

मुनि जयेशकुमार जी ने कन्याओं एवं किशोरों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि इस चातुर्मास में उन्होंने उल्लेखनीय उत्साह, सक्रियता एवं प्रतिभा के साथ विभिन्न कार्यों को संपादित कर समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। उन्होंने कहा कि ऐसी प्रतिभाशाली कन्याएँ एवं किशोर धर्मसंघ की प्रभावना को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल सह-संयोजिका दिया बांठिया एवं किशोर मंडल सह प्रभारी हर्ष चोपड़ा ने किया। कन्या मंडल संयोजिका उर्वशी चोपड़ा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026

कोप्ल। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 की जिला स्तरीय प्रतियोगिता का भव्य आयोजन हुआ। इसमें पाँच विद्यालयों के लगभग 45 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम मुनि अनंत कुमार जी एवं मुनि जैनम कुमार जी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। अनुव्रत टीम द्वारा प्रस्तुति इस वर्ष का विषय था— 'Our Strength, Our Family – मेरी ताकत, मेरा परिवार।' विद्यार्थियों ने निबंध, भाषण, गायन, चित्रकला एवं कविता जैसी पाँच विधाओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। दिनेश जैन के स्वागत भाषण एवं वर्षा जैन के मार्गदर्शन में प्रतियोगिताएँ सफलतापूर्वक संपन्न हुईं।

सुपर कंप्यूटर है मानव मस्तिष्क, स्मृति विकास से सफल होता जीवन

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में 'स्मृति विद्या का विलक्षण प्रयोग - अवधान' कार्यक्रम का आयोजन उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में आयोजित किया गया। स्मृति एवं गणित से जुड़े हुए अवधान कार्यक्रम में अवधानकार मुनि जिनेश कुमार जी ने अवधान के विभिन्न प्रयोग प्रस्तुत किये जिसे देखकर सभी जनता विस्मित रह गई। गणित से जुड़े जटिल सवालों का जवाब कैलकुलेटर से भी अधिक तीव्र गति से केवल ध्यान और स्मृति के सहारे क्या दिया जा सकता है, इसका जवाब है - हाँ। पर यह संभव है अवधान से। जब इस विद्या को मुनि श्री ने साक्षात् किया तो सभी श्रोताओं की एक ही प्रतिक्रिया थी अद्भुत और आश्चर्यजनक। प्रश्नकर्ता ने उन्हें जब ईस्वी सन्, महीना, तारीख

बताई तो उत्तर में उसे तत्काल वार मुनि श्री ने बता दिया। एक प्रश्नकर्ता ने सोलह खानों का कोष्ठक सर्वतोभद्र यंत्र भरने के लिए 71 अंक दिए। अवधानकार ने 16 खानों का सर्वतोभद्र यंत्र शीघ्र ही भर दिया। जिसमें सभी ओर से गिनती करने पर वही संख्या आई जो प्रश्नकर्ता ने दी थी। जिज्ञासुओं ने घड़ी में सोचा गया समय पूछा तो मुनि श्री ने गणित के फार्मूले के आधार पर तत्काल वह समय बता दिया। कार्यक्रम में उपस्थित लोग तब अभिभूत हो दांतों तले उंगली दबाने लगे जब मुनि श्री ने बताया माला का मनका किस व्यक्ति के कौन से हाथ, कौन सी अंगुली, कौन सा पोर व कौन से मनके पर है। यही नहीं हजारों की संख्या में दिया गया गुणा बिना कागज पेन के सहारे केवल संख्या सुनकर छिपाए अंक को बताकर उन्होंने सबका हैरत में डाल दिया और जब कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम के दौरान सुने गए श्लोक, 24 अंकों की लम्बी संख्या और अलग-अलग भाषा

के पाँच शब्दों को ज्यों के त्यों सुनाये तो पूरा परिसर 'ओम अर्हम्' की ध्वनि से गूँज उठा। उन्होंने घनमूल निष्कासन भी किया। कार्यक्रम की प्रस्तुति के पश्चात् उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनिश्री ने कहा - जीवन की सफलता का महत्वपूर्ण सूत्र है - स्मृति विकास। मनुष्य का मस्तिष्क सबसे अनमोल व सुपर कम्प्यूटर है, लेकिन व्यक्ति ने अपना दिमाग कम्प्यूटर के हाथों गिरवी रख दिया है जिसके कारण स्मृति क्षीण होती जा रही है। स्मृति विकास का एक उपागम है अवधान। यह एकाग्रता की साधना से अनेक विद्याओं का विकास किया जा सकता है उसमें से एक है अवधान। अवधान का अर्थ - ज्ञात और अज्ञात किसी भी परिचित बात या वस्तु को एकाग्र मन से स्मृति कक्ष में धारण करना है। अवधान सिद्धि से लम्बी संख्या, श्लोक आदि को आसानी से याद रखा जा सकता है। कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

कालू परम कृपालू, चांद-चंदन सा शीतल स्वभाव

जयपुर।

मालवीय नगर स्थित अणुविभा केन्द्र में गुरुवार को मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभव कुमार जी संत मुनिराज के सान्निध्य में तेरापंथ जैन संघ के महाप्रतापी अष्टम आचार्यश्री कालूराम जी महाराज की 91वीं पुण्यतिथि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' महाराज ने कहा - संत का पंथ सरलता है। उसमें ऋजुता, मृदुता, सहिष्णुता, अनाकांक्षी, निरभिमानी, निरतिचारी, क्षमाशील, समताशील, सहजता, विनम्रता आदि गुण होते हैं। वह संत अपनी आत्मा के निकट रहता है और आत्मा में रमण करता है। मुनिश्री जी, आचार्य श्री कालू

की पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा - आचार्य श्री कालू परम कृपालू और परम दयालू पुरुष थे। उनका स्वभाव चांद और चन्दन सा शीतल, उनका जीवन

आचार्य कालूगणी जी की 91वीं पुण्यतिथि

सूरज सा उजला और चमकीला था। उनका नेतृत्व न्याय-नीति पर आधारित था।

उन्होंने अपने शासन काल में दीक्षा, शिक्षा, साधना, सेवा और संघ विस्तार के नये कीर्तिमान स्थापित किये। उनकी कष्ट सहिष्णुता और निस्पृहता बेजोड़ थी। मुनिश्री संभव कुमार जी महाराज ने कहा - आचार्य कालू एक करुणाशील

महापुरुष थे। उनकी आभा में तेज था। उनकी वाणी में ओज था। उनके व्यवहार में जादुई प्रभाव था। वे सदाचारी और नीति-निपुण व्यक्ति थे।

उनकी दृष्टि युगानुकूल थी। वे युगद्रष्टा ही नहीं युग स्रष्टा भी थे। उन्होंने जैन शासन और मानवता की जो सेवा की वह उल्लेखनीय है। उनका जीवन साधुत्व का आदर्श है। व्यक्तित्व निर्माण के वे शिल्पकार थे।

आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जैसे विश्व विख्यात व्यक्तित्व उनके शिष्य थे। ऐसे युग पुरुष का युग सदा आभारी रहेगा। कार्यक्रम की शुरुआत में तीर्थंकर शांति नाथ भगवान की स्तुति की गयी। मौके पर तपस्विनी बहिन मोनिका अनुमोदना की।

संयम का निर्णय व्यक्ति नहीं पूरे समाज के लिए गौरव

पीलीबंगा।

मुमुक्षु बहिनो सुमन नाहटा एवं भावना नाहटा के संयम संकल्प की अनुमोदना में आयोजित मंगल भावना कार्यक्रम श्रद्धा, भक्ति, त्याग एवं आध्यात्मिक भावनाओं से ओतप्रोत वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। मुमुक्षु बहिनो के जीवन

परिचय एवं गीतिका की प्रस्तुति पारिवारिक जनों द्वारा दी गई, सकल जैन समाज के अध्यक्ष प्रदीप डागा, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हनुमान जैन, तेरापंथ युवक परिषद् के मंत्री रूपेश सुराणा, महिला मंडल अध्यक्ष सुलोचना देवी बांठिया सहित ने अभिव्यक्त दी। वैरागी बहिनो ने अपनी वैराग्य भावना

की यात्रा को साझा करते हुए उपस्थित जनसमुदाय को तप, त्याग, स्वाध्याय एवं संयममय जीवन की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने अपने जीवन में आध्यात्मिक साधना को बढ़ाने तथा आत्मकल्याण के पथ पर आगे बढ़ने का संकल्प भी व्यक्त किया। संचालन सतीश पुगलिया ने किया।

दीक्षा केवल वेश परिवर्तन नहीं, जीवन का सही रूपांतरण है

विलेपार्ले, मुंबई।

साध्वी राकेश कुमारी जी आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में दीक्षार्थी बाबूलाल बाफना के मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। दीक्षार्थी बाबूलाल बाफना की दीक्षा गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा 20 सितंबर 2026 को लाडनूं में फरमाई गई है। दीक्षार्थी बाबूलाल बाफना ने अपने वक्तव्य में अपने वैराग्य भाव तथा गुरुदेव द्वारा प्राप्त दीक्षा

के आदेश के संदर्भ में संक्षिप्त रूप से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने सभी को लाडनूं में आयोजित होने वाले दीक्षा समारोह में पधारने का निमंत्रण देते हुए आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ने

दीक्षार्थी मंगल भावना

की प्रेरणा दी। साध्वी राकेश कुमारी जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि 'पुरुषार्थ ही सफलता की मंजिल है और संकल्प के साथ आत्मविश्वास आवश्यक है। उन्होंने कहा कि दीक्षा

जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह केवल वेश परिवर्तन नहीं, बल्कि जीवन का सही रूपांतरण है। साध्वी श्री जी ने दीक्षार्थी बाबूलाल बाफना के प्रति मंगलभावना व्यक्त करते हुए उनके आत्मकल्याण एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं। इस अवसर पर विलेपार्ले के अध्यक्ष महेंद्र बड़ाला, महिला मंडल अध्यक्ष कुसुम कोठारी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति करते हुए दीक्षार्थी को मंगलकामनाएं प्रेषित कीं।

धन्य हैं वो माता-पिता जो संतान को देते हैं संयम की अनुमति

पल्लवरम।

तेरापंथ धर्मसंघ की मुमुक्षु बहिन कोमल भंसाली का मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वेंकटरामन (Minister of Food and civil supplies TamilNadu) अत्यंत हर्ष के साथ तमिल भाषा में अपने भाव रखते हुए वेंकटरामन ने कहा कि ऐसे मंगलमय कार्यक्रम में आना मेरे लिए सौभाग्य की

बात है। इस उम्र में सब कुछ त्याग कर संयम के मार्ग पर अग्रसित होना निश्चित

दीक्षार्थी मंगल भावना

ही, अपने आप में पूर्व कर्मों का फल है। जिसके फल परिणाम स्वरूप व्यक्ति इस संयम के मार्ग पर अग्रसित हो पाता है।

धन्य हैं वो माता-पिता जो संयम के मार्ग पर अग्रसित होने के लिए अपनी अनुमति प्रदान करते हैं। विशेष अतिथि के रूप में विमल चिप्पड़, माला कतरेला

की उपस्थिति होकर मुमुक्षु बहन के आध्यात्मिक जीवन की मंगल कामना की। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा अध्यक्ष दिलीप भंसाली ने दी।

अध्यक्ष लता गिरिया आदि ने अपने भावना व्यक्त किया। तेरापंथ सभा, स्थानकवासी संघ, और मूर्तिपूजक संप्रदाय ने दीक्षार्थी बहन कोमल का सम्मान किया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन गजेन्द्र खांटेड़ ने की। धन्यवाद ज्ञापन प्रेमलता भंसाली ने दिया।

नेत्रदान से किसी की दुनिया का उजाला

गाँधीनगर दिल्ली।

नेत्रदान पखवाड़े के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् गाँधीनगर दिल्ली द्वारा नेत्रदान के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक भव्य एवं प्रेरणादायी नेत्रदान जागरूकता रैली का आयोजन किया गया।

रैली में दिल्ली सभा, गाँधीनगर सभा, महिला मंडल, विकास मंच, नेत्रदान तेरापंथ किशोर मंडल, कन्या रैली मंडल, तेयुप व TKM के युवा व किशोरों, स्थानीय संस्थाओं की 80-100 की सहभागिता ने पूरे उत्साह के साथ भाग लेकर नेत्रदान के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। रैली के विकास मंच पहुँचने पर मुनि अभिजीत कुमार जी व मुनि जागृत कुमार जी ने कृपापूर्वक सभी उपस्थित श्रद्धालुओं को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए मंगल पाठ सुनाया। मुनिश्री ने परिषद् द्वारा पूरे संगठन एवं युवाशक्ति के साथ आयोजित इस जन-जागरूकता

अभियान की सराहना करते हुए सभी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की तथा नेत्रदान के महत्व पर विशेष प्रेरणा प्रदान की। तत्पश्चात तेयुप युवा अध्यक्ष प्रकाश सुराणा ने नेत्रदान जागरूकता के विषय में जानकारी प्रदान करते हुए रैली में पधारें हुए सभी महानुभावों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया। रैली में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित राजस्थान भाजपा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्रीराम अटल ने नेत्रदान के महत्व एवं इसकी उपयोगिता पर प्रभावी जानकारी साझा करते हुए उपस्थित जनसमूह को नेत्रदान के प्रति जागरूक किया।

कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन मंत्री राजेश सेठिया ने किया। नेत्रदान केवल एक संकल्प नहीं, किसी की अंधेरी दुनिया में उजाला देने का माध्यम है। तेयुप गाँधीनगर दिल्ली की यह जागरूकता रैली इसी संदेश को जन-जन तक पहुँचाने की दिशा में एक सार्थक एवं प्रभावशाली प्रयास रही।

सामूहिक आयंबिल महाअभियान : तप एवं संयम की राष्ट्रव्यापी पहल



लाडनूं।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आशीर्वाद एवं साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी की प्रेरणा से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 4 सितंबर 2026 को भारत एवं नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों में सामूहिक आयंबिल महाअभियान आयोजित किया गया। रिपोर्टिंग तक 231 क्षेत्रों में 7,625 सामूहिक आयंबिल संपन्न हुए। अभियान के माध्यम से आयंबिल को आत्मसंयम एवं आत्मचिंतन की साधना के रूप में प्रस्तुत करते हुए AAYAMBIL के सात सूत्रों—आत्मसंयम, आत्मचिंतन,

यम-नियम, आहार-संयम, मनःशुद्धि, विगय-वर्जन, इंद्रिय-संयम एवं लोभ एवं रस-परित्याग—को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया। तेरापंथ भवनों एवं विभिन्न केंद्रों पर आयोजित सामूहिक आयंबिल में श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। देश एवं नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों की भागीदारी से यह आयोजन व्यापक स्तर पर संपन्न हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल सभी सहभागी श्रावक-श्राविकाओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता एवं साधुवाद ज्ञापित करता है, जिनकी श्रद्धा एवं सहभागिता से यह अभियान सफल रहा।

TPF बेंगलुरु वेस्ट शपथ ग्रहण समारोह

विजयनगर।

टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट की नई कार्यकारिणी (कार्यकाल 2026-27) का शपथ ग्रहण समारोह मुनि विनीत कुमार जी ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। सWमारोह की शुरुआत टीपीएफ फेमिना के द्वारा मंगलाचरण से हुई। टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट के पूर्व अध्यक्ष ललित बेगानी ने अपना स्वागत वक्तव्य

दिया। तथ पश्चात में टीपीएफ दक्षिण जोन के पूर्व अध्यक्ष वर्तमान में राष्ट्रीय सहमंत्री विक्रम कोठारी ने दक्षिण जोन के नव मनोनीत अध्यक्ष हितेश गिरिया को शपथ दिलाई और बेंगलुरु वेस्ट के पूर्व अध्यक्ष ललित बेगानी ने बेंगलुरु वेस्ट के नव मनोनीत अध्यक्ष आशुतोष नाहर को शपथ दिलवाई। टीपीएफ बेंगलुरु सेंट्रल के अध्यक्ष जितेन्द्र, आंचलिया, टीपीएफ राष्ट्रीय परामर्श एम सी बलदोटा ने पूरी

टीम को बधाई संप्रेक्षित की। अंत में मुनि विनीत कुमार ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए नई टीम को प्रेरित किया कि वे आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़े रहकर व्यावसायिक उन्नति और सामाजिक सेवा दोनों में आगे बढ़ें। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट के पूर्व मंत्री कौशल खटेड़ ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट के मंत्री हर्ष बरलोटा द्वारा प्रस्तुत किया गया।

जयाचार्य का जीवन त्याग, तपस्या अनुपम उदाहरण

जयपुर।

रामनिवास बाग स्थित 'साधना का प्रज्ञापीठ' पर मुनि सुधाकरजी के सान्निध्य में श्रीमद् जयाचार्य जी का 146वां निर्वाण दिवस समारोह श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप सदस्यों द्वारा विजयगीत के संगान के साथ हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति देकर जयाचार्य जी के आदर्शों को जीवन में धारण करने का प्रेरक संदेश दिया। समाज की विभिन्न सभा-संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ-साथ परिषद्

की ओर से सभी अतिथियों व प्रायोजक परिवारों का सम्मान किया गया। तेयुप जयपुर अध्यक्ष प्रवीन जैन ने स्वागत

श्रीमद् जयाचार्य जी का 146वां निर्वाण दिवस समारोह

भाषण देते हुए कहा कि जयाचार्य जी का जीवन त्याग, तपस्या और साधना का अनुपम उदाहरण है। 'साधना का प्रज्ञापीठ' आज जन-जन की आस्था का केंद्र बन चुका है और समाज सेवा में जैन समाज का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। मुनि सुधाकर जी ने अपने आशीर्वाद में कहा कि श्रीमद् जयाचार्य जी का जीवन

हमें कर्तव्य, अनुशासन और मर्यादा के प्रति सजग करता है, जो जीवन जीने के सच्चे प्राण तत्व हैं। इस अवसर पर जैन साहित्य की स्टॉल पर 50 प्रतिशत की विशेष छूट दी गई तथा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर की ओर से आमजन के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया। समारोह की सफल संयोजना संयोजक श्रेयांश बैंगानी, करण नाहटा सहित तेयुप व किशोर मंडल के सदस्यों द्वारा की गई। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन श्रेयांश कोठारी एवं श्रेयांश बैंगानी ने किया, मंत्री जयंत भूरा ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

दिल से उतरने से दिल में उतरने तक : अंतरात्मा को झकझोरते 'Exclusive Secrets'

ऊर्ध्वारोहण की दिशा मैत्री

● शासनश्री साध्वी मंजूरेखा ●

भारतीय संस्कृति में पर्वों के अनेक रूप हैं, उसी का एक रूप है आध्यात्मिक पर्व पर्युषण महापर्व। अनादि अनन्त इन शाश्वत परंपराओं में पर्युषण पर्व की अपनी महत्ता है। सालभर इंसान अनेक भूलें करता है, अनेक तरह का व्यवहार करता है। यहाँ-वहाँ कुछ-न-कुछ होता रहता है। जब तक इंसान मुक्ति तक नहीं पहुँचता, तब तक उसका संसार चलता रहता है। अनेक तरह से इसी जीवन में अनुभव होते रहते हैं, अनुभवों के आधार पर इंसान चलता रहता है। कभी किसी से मित्रता कर लेता है तो कभी किसी से दुश्मनी भी कर लेता है, ऐसे छोटे-मोटे दुर्गुणों के बीच जीवन बीतता है, मगर स्वयं का स्वयं से दर्शन नहीं होता।

स्वयं को आत्मा तक पहुँचाने हेतु, पर्युषण पर्व आता है और क्षमा धर्म को समझाता है। हम सभी जानते हैं इंसान का स्वभाव शांति है, लेकिन जब तक क्रोध, मान, माया, लोभ इन चारों कषायों की बहुलता रहती है, तब तक जीवन में सरलता नहीं आती। जब तक सरलता (समता) नहीं आती, तब तक जीवन की

” जहाँ दूसरों को अपनाने का भाव है, वहीं असली मैत्री है; बाकी सब तो केवल अहम का धुआँ है।

सार्थकता समझ में भी नहीं आती। भगवान महावीर ने मुक्ति तक जाने के लिए ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप की आराधना बताई है।

पर्युषण पर्व मुख्य रूप से सिखाता है:

१. मन, वचन और काय का संयम: स्वयं आत्मा के करीब रहना और दूसरों की भावना को समझना।

२. प्रायश्चित्त : वर्षभर में अनजाने में हुई गलतियों का त्याग और तपस्या द्वारा तन-मन से प्रायश्चित्त करना।

३. मैत्री का आह्वान : जगने का तथा सभी जीवों के साथ मैत्री करने का संदेश। भगवान महावीर ने अहिंसक चित्र पर ज्यादा जोर दिया, उनकी प्रसिद्ध उक्ति है—

'खममि सब्ब जीवे, सब्बे जीवा खमन्तु मे।

मिती मे सब्ब भूए, वेरं मज्झ न केण्डी।'

'मैं सब जीवों से क्षमा मांगता हूँ, सब जीव मुझे क्षमा प्रदान करें। मेरा सबसे मैत्री भाव है, किसी से मेरा बैर विरोध नहीं है।' भगवान महावीर जब क्षमा का आह्वान करते हैं, तो उनके सामने केवल आज नहीं है, उनके साथ पूरा अतीत जुड़ा है।

चित्त को निर्मल बनाने के लिए ही उन्होंने ध्यान के रूप में अहिंसा के लंबे प्रयोग किए। वर्तमान में अहं भरी जीवनशैली में जो इंसान करुणा, मैत्री तथा प्रेम को समझता है, वही मैत्री को समझ सकता है, उसके हार्द तक पहुँच सकता है और दूसरों को रस देना भी

जानता है।

मैत्री के दो प्रमुख पक्ष :

१. दार्शनिक पक्ष : 'आत्मतुल्यता का सिद्धांत' (दूसरों को अपने समान समझना)।

२. प्रायोगिक पक्ष : सभी का हित चिंतन करना और दूसरों को रस (प्रेम/आनंद) देना।

एक प्रेरक दृष्टांत :

एक दिन राजा ने अपनी दोनों महारानियों को बुलाया और बिना ईंधन के केवल ईख (गन्ने) का प्रयोग करके रसोई बनाने को कहा। बड़ी रानी ने सीधा ईख चूल्हे में डाल दिया, जिससे चारों तरफ धुआँ उठा और खाना बनना संभव नहीं हुआ। लेकिन छोटी रानी समझदार थी; उसने बच्चों को ईख चूसने के लिए दिया और उनके द्वारा फेंके गए छिलकों से आग जलाकर रसोई तैयार कर दी।

जो दूसरों को रस देना नहीं जानता है, धुआँ वही होता है। यह मैत्री का प्रायोगिक रूप है। मैत्री के विकास के लिए शक्ति का विकास, शक्ति के लिए सहिष्णुता, और उसके

लिए निर्मलता का विकास जरूरी है। भगवान महावीर मैत्री के महान प्रवर्तक थे, उन्होंने जन-जन को मैत्री का पाठ पढ़ाया। वे एक कुशल चिकित्सक थे। जैसे माली की देखभाल और कांट-छांट से ही बगीचे के सौंदर्य को बरकरार रखा जा सकता है, वैसे ही बुराई अंतरात्मा पैदा करती है। एक सड़ा हुआ पान अनेक पान को सड़ा देता है। सामाजिक जीवन में भिन्न-भिन्न रुचि, विचार व संस्कार से राग-द्वेष की ग्रंथि घुलने लगती है। ग्रंथि विमोचन के लिए पाक्षिक, चातुर्मासिक व संवत्सरी प्रतिक्रमण किया जाता है और एक दूसरे से आपस में 'खमतखामणा' करते हैं।

धर्म की पहली सीढ़ी सम्यग्दर्शन है—

अपनी तरफ से क्षमा दे दो। मैत्री-क्षमा हमारे आत्म-विकास का सुरक्षा कवच है। परभाव से स्वभाव में लौटने की प्रक्रिया ही प्रतिक्रमण है और इसका फलित है 'खमतखामणा'। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की इसी भावना को प्रस्तुत करता है क्षमापर्व।

प्रेम के दीप अब नहीं जले तो कब जलेंगे?

अमन के फूल अब नहीं खिले तो कब खिलेंगे?

भूल-गिले, शिकवों को कर दिल से क्षमायाचना,

टुकड़े हुए दिल अब नहीं मिले तो कब मिलेंगे?

क्षमा पर्व — आत्मा का परम सौंदर्य और साधना का मार्ग क्षमा वीरस्य भूषणम्— क्षमा वीरों का आभूषण है

● साध्वी रौनक प्रभा ●

१. क्षमा का मूल स्वरूप एवं महत्व

क्षमा मांगने से अहंकार ढलता है और गलता है, तो क्षमा करने से सुसंस्कार पलता है और चलता है। क्षमा शीलवान का श्रेष्ठ शस्त्र है और अहिंसक का अमोघ अस्त्र। यह प्रेम का परिधान, विश्वास का विधान, सृजन का सम्मान और नफरत का अचूक निदान है। क्षमा आत्मा में पवित्रता का प्रवाह, नैतिकता का निर्वाह, सद्गुणों का संवाद और अहिंसा का जीवंत अनुवाद है।

क्षमा दिलेरी के दीपक में दया की ज्योति है तथा अहिंसा की अंगूठी में मानवता का मोती है। कमजोर, असमर्थ अथवा कायर व्यक्ति कभी क्षमा करने की शक्ति धारण नहीं कर सकता। जो आत्मबल से संपन्न है, समर्थ है और वीर है, वही सच्चा क्षमावान हो सकता है। संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली तीर्थंकर होते हैं, अतः वे ही सबसे अधिक क्षमावान भी होते हैं।

२. शास्त्रों का संदेश

क्रोध शांत करने के लिए भगवान महावीर और जैन आगमों में कहा गया है:

उवसमेण हणे कोहं, माणं महवया

जिणे।

माया मज्जव भावेण, लोहं संतोसओ जिणे॥

अर्थ:

क्रोध को शांति (उपशम) से जीतो, अहंकार को नष्ट (मृदुता) से जीतो,

छल-कपट (माया) को सरलता (आर्जव) से जीतो, और लोभ को संतोष से जीतो।

यही शांति का शाश्वत मार्ग है। वैर-भाव की अग्नि को शांत करने के लिए क्षमा का शीतल जल ही आवश्यक है। जिस प्रकार राख फेंकने वाले के स्वयं के मुंह पर राख उड़कर आती है, उसी प्रकार गाली या अपशब्द देने वाले का बुरा स्वयं ही होता है।

३. महापुरुषों के प्रेरक दृष्टांत

संत समर्थ रामदास और गृहस्वामिनी:

संत समर्थ रामदास एक घर के द्वार पर भिक्षा मांगने गए। गृहस्वामिनी उस समय अत्यधिक क्रोध में थी और उसने रसोई साफ करने का गंदा कपड़ा (मसोता) संत के मुंह पर फेंक दिया। समर्थ रामदास शांत रहे, सीधे नदी पर गए, उस कपड़े को धोकर साफ किया और उसकी बाती बनाकर शाम को ईश्वर की आरती में जलाया। उन्होंने प्रार्थना की— 'हे प्रभु! जैसे यह बाती अंधकार दूर कर रही है, वैसे ही उस महिला के मन का अज्ञान और अंधकार भी दूर हो।' यह है क्रोध को क्षमा से जीतने का अनूठा उदाहरण।

आचार्य भिक्षु का विनोद और विवेक

घाणेराम में कुछ लोगों ने आचार्य भिक्षु से कहा— 'तुझे देखने वाला नरक में जाता है।' आचार्य श्री ने सहजता से पूछा— 'और आपका मुंह देखने वाला?' वे बोले— 'वह तो स्वर्ग जाता है।' आचार्य भिक्षु ने मुस्कराते हुए कहा— 'तब तो मेरे लिए बहुत अच्छा हुआ, मुझे तो स्वर्ग ही मिलेगा क्योंकि मैंने आपका मुंह

देख लिया!' विरोध तुरंत विनोद में बदल गया और आवेश का रोष क्षमा की सरिता में बह गया।

भगवान बुद्ध और अपशब्दों का उपहार

जब एक व्यक्ति ने भगवान बुद्ध को कटु वचन और गालियाँ दीं, तो उन्होंने मुस्कराते हुए कहा— 'यदि तुमने मुझे कोई उपहार दिया और मैंने उसे स्वीकार ही नहीं किया, तो वह उपहार किसके पास रहा? निश्चित ही तुम्हारे पास।' बुद्ध ने स्पष्ट किया कि अपशब्द बोलने वाले के पास ही रह जाते हैं यदि हम उन्हें स्वीकार न करें।

४. जीवन में क्षमा भाव कैसे बढ़ाएं? (३ व्यावहारिक चरण)

क्षमा भाव को बढ़ाने और दैनिक जीवन में उतारने के ३ मुख्य सूत्र हैं:

यह समझें कि हर व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ (Best) दे रहा है—

जैसे एक छोटे बच्चे की नादानी, रोने या गंदगी फैलाने पर माता-पिता उस पर गुस्सा नहीं करते क्योंकि वे जानते हैं कि बच्चे की समझ की सीमा यही है। उसी प्रकार, जब कोई हमारे साथ बुरा व्यवहार या धोखा करे,

तो यह समझें कि उसकी चेतना, मानसिक स्थिति और जीवन के अनुभवों की अपनी सीमाएँ हैं। जैसे एक तितली पर्वत पार नहीं कर सकती और छोटा पक्षी समुद्र पार नहीं कर सकता, वैसे ही कोई व्यक्ति अपनी समझ के स्तर से परे जाकर व्यवहार नहीं कर सकता। यह सोच आते ही दूसरों को माफ करना आसान हो जाता है।

पाप से घृणा करें, पापी से नहीं

(Let's not hate the hater):

महात्मा गांधी के आश्रम में जब एक चोर पकड़ा गया, तो गांधी जी ने उसकी विवशता समझकर उसे क्षमा कर दिया और संदेश दिया— 'नफरत पाप से करो, पापी से नहीं।' किसी व्यक्ति की भूल उसका स्थायी स्वरूप नहीं, बल्कि तात्कालिक व्यवहार (Behaviour) है। आत्मा मूलतः पवित्र है। परिस्थिति या अज्ञानता के कारण हुई भूल के आधार पर व्यक्ति को हमेशा के लिए बुरा मानना उचित नहीं है।

यह स्वीकार करें कि कोई भी पूर्ण (Perfect) नहीं है:

हम अक्सर दूसरों पर गुस्सा इसलिए होते हैं क्योंकि हम स्वयं को परफेक्ट मानने लगते हैं और चाहते हैं कि दुनिया हमारे हिसाब से चले। परंतु हकीकत यह है कि हम खुद भी अनेक गलतियाँ करते हैं। जब हम अपनी कमियों के बावजूद खुद को माफ कर देते हैं, तो दूसरों को माफ करने में कठोरता क्यों? इस सत्य को स्वीकारते ही क्षमा सहज हो जाती है।

निष्कर्ष (F2 Formula)

इन ३ विचारों को मन में रखकर तथा F2 Formula — Forgive & Forget (क्षमा करें और भूल जाएँ) की थैरेपी अपनाकर हम अपनी क्षमा-शक्ति का पूर्ण विकास कर सकते हैं और जीवन में परम शांति प्राप्त कर सकते हैं।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

युवाचार्य श्री महावीरकुमार जी : आत्मानुशासन से आत्म-कल्याण की ओर

● महावीर सेमलानी, पूर्व कार्यकारी संपादक, JTN ●
(2014 - 2017)

1. गुरु-शिष्य परंपरा और ऐतिहासिक मनोनयन : तेरापंथ धर्मसंघ की गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय साधना-जगत की एक अनुपम कड़ी है। आचार्य भिक्षु से प्रारम्भ हुई यह दिव्य शृंखला आचार्य कालूगणी, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ होते हुए वर्तमान युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण तक निर्बाध रूप से प्रवाहित हो रही है। इसी परम्परा में एक नया और गौरवशाली अध्याय तब जुड़ा, जब आचार्य श्री महाश्रमण ने मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी को धर्मसंघ के युवाचार्य पद पर आसीन कर उन्हें भावी उत्तराधिकारी घोषित किया। आचार्य भिक्षु के 301वें जन्म-दिवस पर आयोजित बोधि दिवस समारोह के पावन प्रसंग पर हुई यह घोषणा संपूर्ण तेरापंथ समाज के लिए हर्ष और गौरव का अवसर बन गई।

2. दीक्षा से युवाचार्य तक की प्रेरक साधना-यात्रा : युवाचार्य श्री की साधना-यात्रा भी अत्यंत प्रेरक रही है। वर्ष 2001 में गंगाशहर के मर्यादा महोत्सव के अवसर पर पिता सवाईसिंह जी और पुत्र महावीर जी की जोड़ी ने भावपूर्ण संगीतमय अनुनय-विनय के साथ दीक्षा की भावना व्यक्त की थी। तत्कालीन आचार्य महाप्रज्ञ जी ने उन्हें दीक्षित किया और तभी युवाचार्य महाश्रमण जी (वर्तमान आचार्यश्री) को यह निर्देश भी दिया कि मुनि महावीर को सदैव अपने सान्निध्य में रखें। इसी दीर्घ सान्निध्य में रहकर उन्होंने आध्यात्मिक साधना, संघ-व्यवस्था, अध्ययन, अनुशासन और संगठनात्मक दायित्वों का कुशलता से निर्वहन किया, जिसने उन्हें संत-समाज और श्रद्धालुओं के बीच विशेष सम्मान दिलाया।

3. व्यक्तित्व के बहुआयामी गुण एवं आचार्य तुलसी की झलक : युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी का व्यक्तित्व अनेक विशिष्ट गुणों का अद्भुत संगम है। उनके सुशिष्यों और संत-समाज के अनुसार उनका स्वभाव सहजता, मृदुता, शांति और आध्यात्मिक गरिमा से ओतप्रोत है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता है उनकी सरलता, विनम्रता और आत्मीयता — जिसमें किसी प्रकार

का आडंबर नहीं, बल्कि सहज भावों का स्वाभाविक प्रवाह दिखाई देता है। वे आगम-वाणी के गहन मर्मज्ञ और श्रुत के सच्चे आराधक माने जाते हैं। उनकी विद्वता, विनय, विवेक और सहिष्णुता अनुकरणीय है, तो साथ ही अनुशासित जीवन-शैली और सेवा-भावना उनके चरित्र की पहचान है। तप, समर्पण और संघ-निष्ठा के गुण उनमें कूट-कूट कर भरे हैं, और यह भी उल्लेखनीय है कि उनमें आचार्य तुलसी के अनेक महनीय गुणों की झलक भी देखी जाती रही है — जो इस बात का प्रमाण है कि धर्मसंघ को एक ऐसा कुशल मार्गदर्शक मिला है, जो पूर्ववर्ती आचार्यों की तपस्या और साधना की विरासत को सहज ही आगे बढ़ाने में समर्थ है।

” जिस नाम में 'महावीर' का विवेक हो और हृदय में गुरु-आज्ञा का संबल, वही व्यक्तित्व धर्मसंघ को स्वर्णिम दिशा प्रदान करता है।

4. सामाजिक जागरण, गुरु-परीक्षण और मंगल-अभिलाषा: नैतिकता, नशामुक्ति, सद्भावना और मानवता के संदेश के प्रचार-प्रसार में युवाचार्य श्री की भूमिका देश-विदेश में सराही जाती रही है। उनके मार्गदर्शन में धर्मसंघ ने आध्यात्मिक, नैतिक एवं सामाजिक जागरण के अनेक अभियान संचालित किए हैं, जिनसे समाज में संयम और मानवीय मूल्यों की चेतना जाग्रत हुई है। किसी भी योग्य उत्तराधिकारी के चयन से पूर्व गुरु द्वारा किया जाने वाला दीर्घकालिक और सर्वांगीण परीक्षण तेरापंथ की विशिष्ट परम्परा रही है, और युवाचार्य श्री इस कसौटी पर पूर्णतः खरे उतरे हैं — यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता और उपलब्धि है। इस पावन वर्धापन के अवसर पर संपूर्ण तेरापंथ समाज की ओर से युवाचार्य श्री के दीर्घ, स्वस्थ एवं तेजस्वी जीवन की मंगल कामना की जाती है। आचार्य प्रवर और युवाचार्य प्रवर के कुशल संयुक्त मार्गदर्शन में धर्मसंघ निरंतर विकास और आध्यात्मिक उन्नति के नए सोपान तय करे — यही हार्दिक शुभकामना है। उनकी सहजता, विद्वता और सेवा-निष्ठा से युक्त यह उज्ज्वल व्यक्तित्व न केवल तेरापंथ धर्मसंघ के लिए, अपितु समग्र मानवता के लिए अहिंसा, संयम और आत्म-कल्याण का एक नया मार्ग प्रशस्त करे, यही मंगल भावना है।

युवाचार्य महावीर – साधना की ऊंचाई, संकल्प की दृढ़ता

● संजय वेदमेहता, पूर्व कार्यकारी संपादक, JTN ●
(2017-2019)

तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान साधना की उत्कृष्टता और दृढ़ आचार निष्ठा के साथ एक गुरु एक अनुशासना की सुदृढ़ परंपरा से है। तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक महामना आचार्य भिक्षु ने मर्यादा रची कि उत्तराधिकार का निर्णय वर्तमान आचार्य द्वारा लिया जाएगा एवं सभी को वह सहर्ष स्वीकार होगा। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुख्य मुनि महावीरकुमार जी को युवाचार्य के रूप में मनोनीत कर इसी परंपरा को सुदृढ़ता प्रदान की और धर्मसंघ को निश्चितता प्रदान की है।

युवाचार्य घोषणा : दीक्षाभूमि जसोल का आनंदमय वातावरण : युवाचार्य पद की घोषणा के उन ऐतिहासिक क्षणों का साक्षी बनने के लिए मैं लाडून में तो उपस्थित नहीं रह सका, लेकिन उन अनुपम क्षणों की अनुभूति मुझे जसोल में रहकर भी गहराई से हुई। घोषणा के समय दीक्षा भूमि जसोल में साध्वी कुन्दनप्रभा जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में श्रावक समाज के बीच श्रद्धा, उत्साह और प्रसन्नता का जो

स्वाध्याय और सेवा के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों ने उन्हें साधु-संघ की अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठित किया। उनके जीवन में ज्ञान की गहराई, दर्शन की स्पष्टता और आचरण की निर्मलता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उनकी जीवनयात्रा यह संदेश देती है कि साधना की ऊंचाई आयु से नहीं, संकल्प की दृढ़ता से निर्धारित होती है।

योगक्षेम की व्यापक दृष्टि : युवाचार्य श्री महावीर मुनि की चिंतन-दृष्टि में धर्मसंघ की परंपराओं, आचार-विचार और मूल्यों का संरक्षण जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है- समय के अनुरूप नई उपलब्धियों और रचनात्मक आयामों का विकास। सधन साधना शिविरों की आयोजना में उनका योगक्षेम चिंतन और श्रम संघ की संपदा में श्रीवृद्धि के रूप में फलित हो रहा है।

नयी पीढ़ी-नयी आशा : हम लगातार देखते हैं कि युवाचार्य प्रवर संघीय संस्थाओं के युवा कार्यकर्ताओं को केवल सामाजिक गतिविधियों तक सीमित न रहकर आत्म-विकास, संयम, साधना और मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देते हैं। बालकों व किशोरों को भी शुरुआती अवस्था में ही आध्यात्मिकता से जोड़ने को मानो उन्होंने पहली प्राथमिकता दी है। युवाचार्य प्रवर के चिंतन और प्रेरणा से निश्चित ही नई पीढ़ी को नई दिशा मिल रही है।

वर्धापना व श्रद्धासिक्त अभिनंदन : वर्धापना का वास्तविक अर्थ केवल आयु या पद की वृद्धि का अभिनंदन करना नहीं, बल्कि उस तपःपूत जीवन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना है, जो निरंतर दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित है। इस पावन अवसर पर युवाचार्यश्री महावीर मुनि के चरणों में कोटिशः वंदन एवं हार्दिक अभिनंदन। आध्यात्मिक साधना की उनकी यात्रा निरंतर उन्नत होती रहे, परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृपादृष्टि में वे संघ के योगक्षेम को और अधिक सुदृढ़ करें तथा तेरापंथ धर्मसंघ की संपदा, प्रतिष्ठा और प्रभावना में निरंतर श्रीवृद्धि करते रहें, मंगलभावों सहित।

” साधना और सफलता की ऊंचाई आपकी उम्र या साधनों से नहीं, बल्कि आपके संकल्प की दृढ़ता से तय होती है।

लघु वय में वैराग्य का जागरण : राजस्थान के जैसलमेर जिले के छोटे से ग्राम फलसुंड में पले-बढ़े बालक महावीर के अंतर्मन में प्रारंभ से ही वैराग्य और आध्यात्मिक चेतना के संस्कार विद्यमान थे। मात्र तेरह वर्ष की अल्पायु में उन्होंने जसोल में परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के करकमलों से जैन भागवती दीक्षा स्वीकार की। इतनी छोटी आयु में संयम-पथ का वरण करना उनके भीतर निहित आध्यात्मिक संस्कारों, दृढ़ संकल्प और आत्मिक सामर्थ्य का परिचायक था।

संकल्प की दृढ़ता-साधना की ऊंचाई : दीक्षा के पश्चात् गुरुओं की कृपा और मार्गदर्शन ने उनके व्यक्तित्व को निरंतर निखारा। ज्ञान, ध्यान,

TPF शाखा शपथ ग्रहण समारोह

नागपुर।

TPF सत्र 2026-2028 की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से आयोजित किया

गया कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। जैन संस्कारक आनंदमल सेठिया ने मंगल मन्त्रोच्चारण के साथ विधि पूर्ण करवाते हुए जैन संस्कार विधि के महत्व से सभी को अवगत करवाया। TPF

नागपुर के निवर्तमान अध्यक्ष राहुल कोठारी ने TPF नागपुर शाखा के नव मनोनीत अध्यक्ष नवीन सेठिया को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। तत्पश्चात् अध्यक्ष नवीन सेठिया ने अपनी नई टीम की घोषणा करते हुए पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई। TPFअध्यक्ष

नवीन सेठिया ने अपनी टीम का स्वागत किया और आगामी कार्यकाल के लिए अपना दृष्टिकोण साझा किया। उन्होंने एक प्रोफेशनल के चार प्रमुख कर्तव्यों पर प्रकाश डाला — ज्ञान साझा करना, ईमानदारी से कार्य करना, युवाओं को संस्कार एवं धर्म से जोड़ते हुए मार्गदर्शन देना और

जरूरतमंदों की शिक्षा में सहयोग करना। तेरापंथ सभा अध्यक्ष संजय पुगलिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा प्रमिला मालू, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष प्रियंक छाजेड़ ने भी अपने विचार साझा किए और नई टीम को शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम का संचालन CA विवेक पारख ने किया।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

तेरापंथ का उजला स्वर्णिम भविष्य : युवाचार्य श्री महावीर मुनि

● धर्मेन्द्र डाकलिया (पूर्व संपादक, जैन तेरापंथ न्यूज) ●
(2019-2020)

धोरों की धरती से निकलकर भिक्षु पट की शोभा का नाम है : युवाचार्य श्री महावीर मुनि

1. फलसुंड का प्रारंभिक परिवेश और धार्मिक परिवर्तन : रेगिस्तानी भूभाग का सिरमौर जैसलमेर जिले की सीमा से लगे प्राचीन कस्बे फलसुंड का परिवेश कभी धार्मिक दृष्टि से अपेक्षाकृत उपेक्षित रहा था। रेगिस्तानी भूभाग, सीमित आवागमन और तेरापंथी साधु-साध्वियों के दीर्घ सान्निध्य के अभाव के कारण यहाँ के जैन परिवारों में जैन धार्मिक संस्कारों का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया था। यद्यपि नगर में जैन समाज मौजूद था, फिर भी वहाँ की धार्मिक जीवन-पद्धति पर कबीरपंथी विचारधारा का प्रभाव अधिक दिखाई देता था। आसपास के तेरापंथ-बहुल क्षेत्रों से दूरी और साधु-साध्वियों के नियमित विहार का अभाव भी इसका एक प्रमुख कारण था।

तेरापंथ के आचार्य श्री तुलसी ने फलसुंड की इस स्थिति के भीतर छिपी संभावनाओं को बहुत पहले पहचान लिया था। उनके निर्देश पर साध्वी श्री रतनकुमारी आदि साध्वियों को वहाँ भेजा गया। वरिष्ठ मुनि मोहनलाल जी 'आमेट' ने भी फलसुंड क्षेत्र की बार-बार सार-संभाल की और कठिन परिस्थितियों में लंबी यात्राएँ कर वहाँ धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण किया। 1972 में मुनि श्री वत्सराज जी के फलसुंड आगमन और उनकी प्रेरणा से वहाँ के जैन श्रावकों द्वारा आचार्य श्री तुलसी से गुरु-धारणा करने की घटना ने इस परिवर्तन को आगे बढ़ाया। इसके बाद भी समय-समय पर साधु-साध्वियों के आगमन से जैन समाज को अपने धर्म की विधियों और सिद्धांतों को समझने का अवसर मिलता रहा।

फलसुंड के धार्मिक जीवन में निर्णायक परिवर्तन 1989 में साध्वी श्री रूपांजी के आगमन से हुआ। उनका 62 दिनों का दीर्घ प्रवास स्थानीय समाज के लिए आशा की नई किरण बना। उनके सान्निध्य में फलसुंड के जैन परिवारों को जैन धर्म की बारीकियों को समझने और अपनी धार्मिक आराधना को जैन पद्धति के अनुरूप करने का अवसर मिला। इस दौरान अनेक परिवार तेरापंथ से जुड़ने लगे।

2. बाल्यकाल और दीक्षा का पथ : इसी धार्मिक वातावरण में महावीर का बाल्यकाल बीता। सवाईचंद जी कोचर के परिवार में जन्मे बालक महावीर पर साध्वी श्री रूपांजी का विशेष ध्यान गया। अत्यंत छोटी आयु में भी उनमें साधु-साध्वियों के प्रति मर्यादा, अनुशासन और संयम की सहज समझ दिखाई देती थी। साध्वी श्री रूपांजी ने उनके व्यक्तित्व की विलक्षणता को पहचानते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की भविष्यवाणी की और उनके संस्कारों पर आधारित पंक्तियाँ भी रचीं। महावीर के व्यक्तित्व में

आध्यात्मिक संस्कार और वैराग्य की भावना बचपन से ही विकसित हो रही थी।

फलसुंड के धार्मिक विकास के साथ महावीर के जीवन में भी निर्णायक मोड़ आया। आचार्य महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में उन्होंने छोटी आयु में ही अपने अंतर्मन की वैराग्य-भावना सार्वजनिक रूप से व्यक्त की और दीक्षा की इच्छा प्रकट की। गुरु की अनुमति तथा पिता की आज्ञा के बाद 3 मार्च 2002 को जसोल में महावीर की दीक्षा संपन्न हुई। पौने तेरह वर्ष की आयु में महावीर कुमार से महावीर मुनि बने इस बालक ने आगे चलकर अध्ययन, साधना और संघ-सेवा में स्वयं को समर्पित किया।

3. शैक्षणिक व आध्यात्मिक उपलब्धियाँ: उन्होंने सात वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त कर 'श्रेष्ठ श्रुताराधक' का अलंकरण पाया, विश्वविद्यालय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया तथा जैन विश्व भारती में एम.ए. की शिक्षा पूर्ण की। अनेक जैन ग्रंथों और श्लोकों का अध्ययन एवं स्मरण, संस्कृत में भाषण, गीत-गायन में उपलब्धि तथा विभिन्न संघीय दायित्वों में सक्रिय सहभागिता उनके ज्ञान, अध्ययनशीलता और प्रतिभा को रेखांकित करती है। वर्ष 2022 में उनके शोध-प्रबंध 'जैन आगमों में पर्यावरणीय चिंतन : एक अध्ययन' के लिए उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई।

4. ऐतिहासिक परिवर्तन और युवाचार्य पद : जिस रेगिस्तानी कस्बे में कभी साधु-साध्वियों का नियमित सान्निध्य दुर्लभ था, वहीं से एक प्रतिभाशाली बालक का संयम-पथ पर अग्रसर होकर संघ के महत्वपूर्ण दायित्व तक पहुँचना एक उल्लेखनीय परिवर्तन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आचार्य महाश्रमण जी द्वारा उनकी प्रतिभा और साधना को पहचानकर उन्हें 'मुख्य मुनि' और फिर युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के रूप में मनोनीत किया जाना फलसुंड के इतिहास का नया अध्याय है।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि संस्कार, गुरु-सान्निध्य, अध्ययन, साधना, प्रतिभा और समर्पण मिलकर किसी व्यक्ति तथा समाज के भविष्य को दिशा दे सकते हैं। फलसुंड की धार्मिक यात्रा और महावीर मुनि का जीवन इस परिवर्तन की दो परस्पर जुड़ी हुई धाराओं के रूप में सामने आते हैं। मरुस्थल की कठिन भूमि में जिस प्रकार धार्मिक चेतना विकसित हुई, उसी वातावरण से महावीर मुनि का व्यक्तित्व उभरा और उन्होंने ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र की साधना के माध्यम से तेरापंथ संघ में युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के रूप में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। इस अर्थ में 'तेरापंथ का स्वर्णिम भविष्य' केवल किसी एक व्यक्ति की उपलब्धि का वर्णन नहीं, बल्कि संस्कारों और सतत साधना से निर्मित भविष्य की संभावनाओं का चित्रण है।

युग-परंपरा का पावन संवाहक: युवाचार्य श्री महावीरकुमारजी

● मुकेश भटेवरा (पूर्व कार्यकारी संपादक, JTN) ●
(2020-2021)

1. ऐतिहासिक मनोनयन और पावन प्रसंग : तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में एक नया स्वर्णिम अध्याय उस दिन लिखा गया, जब युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाडलू की पावन धरा पर मुख्य मुनि श्री महावीरकुमारजी को धर्मसंघ के युवाचार्य पद पर मनोनीत किया। यह घोषणा केवल एक पद की नियुक्ति नहीं, बल्कि आचार्य भिक्षु द्वारा प्रवर्तित उस दिव्य परंपरा की निरंतरता थी, जो अनुशासन, मर्यादा और आध्यात्मिक उत्कर्ष के आधार पर सैकड़ों वर्षों से अक्षुण्ण चली आ रही है। यह अवसर संयोगवश आचार्य भिक्षु के बोधि दिवस के पावन प्रसंग पर आया, जिसने इस निर्णय को और भी अधिक मंगलमय और प्रतीकात्मक बना दिया।

2. व्यक्तित्व, क्षमता और गुरु-दूरदर्शिता : युवाचार्यश्री महावीरकुमारजी का व्यक्तित्व सरलता, विनम्रता और आत्मीयता का अनूठा संगम है। उनकी वाणी में मधुरता, आचरण में संयम और चिंतन में गहराई है, जो उन्हें आचार्यश्री महाश्रमणजी का अत्यंत विश्वस्त और स्नेहभाजन शिष्य बनाती है। धर्मसंघ की बहुश्रुत परिषद के संयोजक के रूप में उन्होंने अपनी संगठनात्मक क्षमता और श्रुत-साधना का उत्कृष्ट परिचय दिया। आचार्य तुलसी के विवेक, श्रमशीलता और श्रुताराधना जैसे महान गुण उनमें समाहित हैं। अतीत में स्वयं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने युवाचार्य पद पर रहते हुए आचार्य महाश्रमणजी को मुनि महावीरजी को सदैव अपने साथ रखने का निर्देश दिया था, जिसकी दूरदर्शिता आज

साकार रूप ले चुकी है।

3. जन-मानस का उल्लास और देश-विदेश में अभ्यर्थना : जिस क्षण लाडलू में युवाचार्य पद की घोषणा हुई, संपूर्ण परिसर 'जय-जय ज्योतिचरण, जय महाश्रमण' के जयघोष से गूँज उठा। श्रद्धालुओं की आँखों में हर्ष के आँसू थे और हृदय कृतज्ञता से भरे हुए थे। यह दृश्य केवल लाडलू तक सीमित न रहकर देश-विदेश के अनेक नगरों तक पहुँचा, जहाँ तेरापंथ समाज ने हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया। जगह-जगह अभ्यर्थना और वर्धापना समारोह आयोजित हुए, जिनमें श्रावक-श्राविकाओं ने नवमनोनीत युवाचार्यश्री के चरणों में अपनी अनन्य भक्ति समर्पित की।

4. धर्मसंघ का स्वर्णिम युग और मंगलकामना : नैतिकता, नशामुक्ति, सद्भावना और मानवता के संदेशवाहक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने इस निर्णय से धर्मसंघ के उज्ज्वल भविष्य के प्रति अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता पुनः प्रमाणित की है। नैतिक मूल्यों के क्षरण और भटकाव के इस दौर में युवाचार्यश्री जैसे सरल, संयमी और श्रुतनिष्ठ संत का नेतृत्व संपूर्ण मानव समाज के लिए प्रकाश स्तंभ सिद्ध होगा। उनकी शांत तेजस्विता, सहज वात्सल्य और अडिग गुरुभक्ति आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। इस पावन अवसर पर उनके चरणों में हार्दिक अभ्यर्थना है कि उनके नेतृत्व में धर्मसंघ प्रगति के नए सोपान तय करे और आचार्य भिक्षु की ज्ञान-ज्योति सदियों तक दीप्तिमान रहे।

” जब गुरु की दूरदर्शिता और शिष्य का समर्पण एक साथ मिलते हैं, तो धर्मसंघ में स्वर्णिम युग का सूत्रपात होता है। ”

सामायिक आत्मा का आहार

चेंबूर।

पर्युषण महापर्व के पावन अवसर पर आज तीसरे दिन प्रभात सामायिक दिवस के रूप में विशेष सामायिक का आयोजन किया गया। साध्वी निर्वाणश्रीजी ने विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वी कुन्दनयशाजी द्वारा श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक के अनेकानेक प्रयोग करवाए। यह दृश्य अपने आप में अत्यंत

मनोहारी एवं आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करने वाला था। पुरुषों की ओर मानो पूरी सफेद बर्फ की चादर सी बिछी हुई प्रतीत हो रही थी, वहीं महिलाओं की ओर केसरिया एवं रंग-बिरंगे परिधानों से मानो फूलों की आभा बिखर रही थी। पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा और सामायिक की साधना से ओत-प्रोत दिखाई दे रहा था। तेषु, चेंबूर के अध्यक्ष हिमांशु गन्ना, मंत्री कपिल मेहता अनेक उपस्थित रहे।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

विनय का शिखर, साधना का पथ: युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी

● अभिषेक पोखरना, पूर्व कार्यकारी संपादक, जैन तेरापंथ न्यूज़ (2021-23)

1. व्यक्तित्व, सहजता और गुरु-परंपरा का समर्पण : तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली परंपरा में गुरु-दृष्टि और गुरु-अनुशासन का विशिष्ट स्थान है, जहाँ वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के आध्यात्मिक नेतृत्व में संघ निरंतर साधना, संयम और मानव-मूल्यों की दिशा में अग्रसर है। युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी का व्यक्तित्व विनम्रता, सरलता और अनन्य समर्पण का अनूठा संगम है, जिनके प्रति श्रद्धा किसी पद या परिचय से नहीं, बल्कि उनके आचरण को देखकर स्वतः जागृत होती है। किसी बड़े दायित्व की गरिमा पद प्राप्त करने में नहीं, बल्कि उसे विनम्रता के साथ धारण करने में है। दायित्व की ऊँचाई के साथ सहजता बनाए रखना, गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण और संघ-निष्ठा—ये विशेषताएँ उनके जीवन को विशिष्ट बनाती हैं।

2. संतत्व की अनुभूति और जीवन दर्शन : युवाचार्यश्री के दर्शन और वाणी के श्रवण से मन में शांति और प्रसन्नता का संचार होता है। संत के समीप बैठकर कभी-कभी शब्दों से अधिक उनका मौन, शांत मुद्रा, सहज मुस्कान और आत्मीय व्यवहार मन पर अमिट छाप छोड़ते हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि संतत्व केवल प्रवचन का विषय नहीं, बल्कि आचरण से अनुभूत होने वाली साधना है। उनके जीवन से यही प्रेरणा मिलती है कि ऊँचा उठने के लिए भीतर से झुकना पड़ता

है; जैसे फल से भरी शाखा झुक जाती है, वैसे ही ज्ञान और दायित्व से संपन्न व्यक्तित्व की विनम्रता उसकी वास्तविक महानता को प्रकट करती है।

3. वर्धापन की सार्थकता और आत्म-प्रेरणा : यह वर्धापन केवल जीवन के एक और वर्ष का अभिनंदन नहीं, बल्कि प्रतिदिन के आत्मानुशासन, त्याग और गुरु-समर्पण की वंदना है, जिसमें 'मैं' का विसर्जन होकर 'संघ' प्रमुख बन जाता है। इस अवसर की सार्थकता केवल शुभकामनाएँ देने में नहीं, बल्कि उनके जीवन से प्रेरित होकर अपनी वाणी में संयम, व्यवहार में विनम्रता, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य और अहं को कम करने का प्रयास करने में है। यदि इन गुणों को जीवन में उतारा जा सके, तो ही वर्धापन-अभिनंदन वास्तव में सार्थक सिद्ध होता है।

4. मंगल-भावना और श्रद्धा-सुमन : गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा-दृष्टि युवाचार्यश्री पर निरंतर बनी रहे, उनकी साधना प्रगाढ़ हो और उनका संयम व विनय समाज के लिए प्रेरणा बना रहे। अंत में भावों को समेटते हुए लेखक व्यक्त करते हैं कि दर्शन मात्र से मन श्रद्धा से झुक जाता है और उनकी सहजता स्वयं को परखने की प्रेरणा देती है। वर्धापन के इस परम पावन अवसर पर युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के चरणों में हृदयस्पर्शी अभिवंदना, श्रद्धापूर्ण वंदन और अनंत मंगलकामनाएँ।

”
जहाँ मैं का
विसर्जन होकर
'संघ' प्रमुख बन
जाता है, वहीं से
सच्चे आध्यात्मिक
जीवन का शुभारंभ
होता है।

नवयुग के नव-अरुण : युवाचार्यश्री महावीरकुमारजी

● पवन फुलफगर (लाडनूँ - सूरत) कार्यकारी सम्पादक ●
जैन तेरापंथ न्यूज़ (2023 - 2025, 2025 - 2027)

1. धर्मसंघ की परंपरा और ऐतिहासिक मनोनयन : तेरापंथ धर्मसंघ की ढाई सौ वर्षों से अधिक की यात्रा में हर युग ने अपनी मर्यादा और अनुशासन को आगे बढ़ाने वाला नेतृत्व पाया है। इसी श्रृंखला में 27 जुलाई 2026 की प्रातः लाडनूँ में आयोजित कार्यक्रम में पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जैसे ही 'आओ मुनि महावीर' कहा, पूरा वातावरण उल्लास से भर उठा। सैकड़ों साधु-साधवियों और हजारों श्रावकों की उपस्थिति में मुख्य मुनि श्री महावीरकुमारजी को धर्मसंघ के युवाचार्य पद पर मनोनीत किया गया। यह निर्णय कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि वर्षों तक आचार्यश्री के सान्निध्य में रहकर निष्ठा, समर्पण और गुरु-आज्ञा-पालन की साधना का स्वाभाविक फल था।

2. व्यक्तित्व और युगीन आवश्यकता : युवाचार्यश्री का जीवन एक साधक के आदर्श स्वरूप का प्रतिबिंब है। वे एक ओर गंभीर शास्त्रीय चिंतन में निमग्न रहते हैं, तो दूसरी ओर सामान्य श्रावक-श्राविकाओं के बीच उतने ही सहज और सरल रहते हैं। मुनि महावीर से मुख्यमुनि और फिर युवाचार्य पद तक की उनकी यात्रा अनुकरणीय विनयशीलता और गुरुभक्ति का प्रतिफल है।

आज के बदलते दौर और क्षरण होते मूल्यों के बीच धर्मसंघ को ऐसे ही संतुलित, संयमी, सौम्य

और श्रुतनिष्ठ नेतृत्व की आवश्यकता थी, जो प्राचीन परंपराओं की रक्षा करते हुए नई युगीन चुनौतियों का सामना कर सके।

”
नवयुग का अरुण
केवल एक पद
का दायित्व नहीं,
बल्कि गुरु-परंपरा
और अनुशासन को
आगे बढ़ाने का
अमर संकल्प है।

3. दूरदर्शिता और अभियानों की निरंतरता : धर्मसंघ का नेतृत्व केवल पदवी का हस्तांतरण नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा का प्रवाह है। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने तेजस्वी नेतृत्व से नशामुक्ति, अहिंसा और सामाजिक सद्भाव के जिन अभियानों को गति दी है, अब युवाचार्यश्री के माध्यम से उन्हें भविष्य की पीढ़ियों तक ले जाने की तैयारी की जा रही है। यही दूरदर्शिता तेरापंथ धर्मसंघ के स्थायित्व का मुख्य आधार रही है।

4. व्यक्तिगत संस्मरण और वर्धापना (लेखक के अनुभव) : सूरत चातुर्मास, भुज मर्यादामहोत्सव, गाँधीधाम, अहमदाबाद तथा लाडनूँ प्रवास के दौरान युवाचार्य प्रवर का निरंतर स्नेहमयी आशीर्वाद प्राप्त होता रहा। सूरत चातुर्मास में सघन साधना शिविर के प्रचार-प्रसार हेतु 'जैन तेरापंथ न्यूज़' (JTN) को विशेष मार्गदर्शन मिला। हजारों घरों का स्वयं पधारकर स्पर्श करना और श्रावकों की सार-संभाल करना उनके जन-सुलभ व्यक्तित्व को दर्शाता है। संपूर्ण JTN परिवार की ओर से उनके चरणों में अनंत श्रद्धा-सुमन अर्पित हैं और यही मंगलकामना है कि उनके नेतृत्व में ज्ञान-दीप की यह ज्योति सदियों तक प्रकाशमान रहे।

मैं अपने आप को भाग्यशाली मानती हूँ

● साध्वी संभवश्री ●

मैं अपने आप को भाग्यशाली मानती हूँ। मुझे राज में रहने का आचार्य प्रवर कि सेवा का अवसर प्राप्त होता है और यहां पर रहने के कारण इन आंखों ने अनेक दृश्य निहारे।

1. मुझे याद है। 2010 का वह अवसर मुझे आचार्य महाप्रज्ञ कि अन्तिम सेवा का अवसर मिला उस दिन शाम कि लास्ट गोचरी जाने का अवसर प्राप्त हुआ इन आंखों ने वह भी दृश्य देखा जब आचार्य महाश्रमणजी ने आचार्य पद ग्रहण किया।

2. मुझे याद है 2016 का वह सुनहरा अवसर उस समय न साध्वी प्रमुखाश्रीजी वहां पर थे न मुख्य नियोजिका जी वहां पर थे। राज में रहने वाली कही सतियां भी वहां पर उपस्थित नहीं थी इन आंखों ने उस दृश्य को निहारा जब आचार्य प्रवर ने साध्वीवर्या व मुख्यमुनि पद का सर्जन किया।

3. मैं याद करती हूँ 2022 का अवसर उस समय आचार्य प्रवर ने साध्वी प्रमुखाश्रीजी को शासनमाता अलंकार से अलंकृत किया उसके बाद

मराज दिल्ली दिखाने पधारे तो आचार्य प्रवर मुझे भी दिल्ली साथ लेके पधारे अगर मैं नहीं जाती तो मराज कि अन्तिम सेवा मैं नहीं कर पाती अन्तिम दर्शन भी नहीं कर पाती, मन में धोका हो जाता इस समय भी भाग्य ने साथ दिया।

4. मैं याद करती हूँ 2022 को उसी 2022 में आचार्य प्रवर को युगप्रधान पद दिया गया वह साध्वी नियोजिकाजी विश्रुतविभाजी को साध्वी प्रमुखा बनाया गया यह दृश्य सरदारशहर का इस सीन को भी मेरी इन नयनों ने निहारा।

5. मैं याद करती हूँ! भिक्षु जन्मोत्सव के लास्ट चरण को स्वामीजी कि 13 को उस दिन तो अचानक से ही आचार्य प्रवर ने मुख्यमुनि प्रवर को युवाचार्य पद प्रदान करवाया सभी देखते ही रह गए योगक्षेम के इस अवसर पर साधु-साधवियों कि अच्छी उपस्थिती थी सभी को यह अवसर देखने को मिला, मुझे सबसे ज्यादा खुशी थी युवाचार्य प्रवर हमारे साथ दीक्षा ली वह उनकी दीक्षा भी जसोल में हुयी थी 18 दीक्षा में एक युवाचार्य प्रवर व दूसरे में साध्वीवर्याजी उनकी समणी दीक्षा हमारे

साथ हुयी और मेरी दीक्षा भी जसोल में हुयी वह में जसोल कि हूँ और उस दिन 13 भी बड़ी थी आचार्य प्रवर ने भिक्षु कि गद्दी पै दूसरे भिक्षु को बिठा दिया पूरा संघ जय-जय नन्दा, जय-जय नन्दा वाला गीत गाने लगा।

यह नयन भाग्यशाली हैं जिनको यह दृश्य देखने को मिले व्यक्ति के कही पर भाग्य अच्छे होते हैं उनको यह दृश्य देखने को मिलते हैं। भाग्य साथ देता है तभी गुरु सन्निधी प्राप्त होती हैं।

भाग्य अच्छे होते हैं तभी आचार्य प्रवर अपने साथ रखते हैं। भाग्य अच्छे होते हैं तभी तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होते हैं। यह सुनहरे पल भाग्य से हि देखने को मिलते हैं।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

AN INSPIRING JOURNEY (युवाचार्यप्रवर की अभिवंदना)

● **Sadhvi Deepti Yasha** ●

An Inspiring Journey. Every great journey begins with a small step, be it from play school to a great scientist, from soldier to army general, or from a local leader to Prime Minister of a country, or from an ordinary monk to Acharya of the congregation. Here is an inspiring journey of the newly appointed Yuvacharya of Terapanth Dharmasangh: YUVACHARYA MAHAVIR.

The journey of Yuvacharya Mahavir is rooted in complete dedication towards Guru duo — Acharya Mahapragya and Acharya Mahashraman. His story is not about a monk who chased success, but a story of a pious soul who chose discipline over comfort, service over recognition, and humility over pride. People admire this as a 'Zero to Hero' journey because Mahavir was born in a small hut in a remote village of Phalsund near Jaisalmer in Rajasthan, and now as an upcoming leader of the great Terapanth congregation. But in spirituality, the journey is much deeper. This journey is:

- from ego to surrender,
- from learning to leading,
- from serving to inspiring generations,
- from silence to motivating, and
- from aham to arham.

The title of 'Yuvacharya' is not a crown to wear — it is a torch to carry and spread the light of Bhagwan Mahavir's and Acharya Bhikshu's teachings to the world. This is not a reward for past deeds,

but a great responsibility for the upliftment of the Dharmasangh. The title reflects the Guru's trust, years of dedication, and a lifelong commitment to guide the sangh with wisdom, compassion, integrity, and simplicity.

The famous proverb goes: 'Rome was not built in a day.' Similarly, the life of Yuvacharya

positivity, humility, and performing every duty without expecting applause.

In a world where many seek attention, he chose transformation. He doesn't speak to impress people, but in fact, he lives to inspire youth — we can say Gen-Z and Gen-Alpha — with total faith in Dev, Guru, and Dharma.

His journey leaves every young heart to discover their own strength with a timeless message:

1. Stay humble (विनम्रता)
2. Keep Serving (सेवा)
3. Dedication towards Guru (समर्पण)

And one day, your work will speak louder than your words.

It is well said that true heroes are not created by mere titles. They are shaped by values, hard work, devotion, dedication, strong determination, and above all, the most important: Guru Kripa. In the case of Yuvacharya Mahavir, His Holiness Acharya Mahashraman bestowed blessings on Muni Mahavir and now, he is an extraordinary legacy of Terapanth Dharmasangh and Jinshasan.

Lastly, I would wish for Yuvacharya Pravar to always shine like the rising sun with new light, new energy, new enthusiasm, and creative thoughts without any vacation, without any expectation, and without any discrimination. At the same time, let the brightness of this rising sun bestowed upon us be for centuries, and may the youth of today not just witness this new encouraging and inspiring chapter, but become a part of it.

The title of Yuvacharya is not a crown to wear — it is a torch to carry and spread the light of Bhagwan Mahavir's and Acharya Bhikshu's teachings to the world.

Pravar reminds us that greatness is never built overnight. It is built through thousands of silent moments — every prayer, every work, every word offered with devotion, dedication, and strong determination.

He embraced every challenge of every responsibility, whether as 'Shrestha Shant Aaradhak', 'Mukhya Muni', 'Bahushrut Parishad Sanyojak', principal of Mahavir Pathshala, or now 'Yuvacharya', with patience,

संघ में आज खुशाली है – आज खुशाली है

● **साध्वी स्वस्थप्रभा** ●

संघ में आज खुशाली है2- आज खुशाली है
झूमती गणवन डाली है- संघ में...
किस्मत जागी महाश्रमण भिक्षुगण माली है
संघ में आज खुशाली है2- ॥ओं॥
चांद कोई नया उगा है, हमारा भाग्य जगा है।
तिलक का उत्सव प्यारा, विश्व नयनों ने निहारा।
मनाते सुरगण मिलकर, घोष नंदी का सुनकर।
वीर-गोयम सी सभा है, नवेली जै.वि. भा. है।
हो हो हो..... भिक्षु के पट की यह परंपरा गौरव शाली है।
संघ में आज खुशाली है ॥१॥

तर्ज: होली आई है हां क् आनंद बरसें है-

क् आनंद बरसें है-

गण नंदनवन रा फुलड़ा सरसें है- क् आनंद।

सर्वोत्तम कर शिष्य चयन, गणराजा चादर ओढ़ावै2
बैठो-बैठो पाटे कर मनुहार बिठावै है क् आनंद ॥१॥

महाप्रतापी-महाश्रमण गुरु, अद्भुत रचना दिखलाई2
वर्धापन पर लाख बधाई, रूं रूं विकसै है क्... ॥२॥

जय जय नंदा, जय जय भद्रा, संघ चतुष्टय रो स्वर है2
गुरु री महामहिमा सुण दिल रा शतदल हर सै है
क् आनंद बरसें है

तर्ज – आज मेरे यार की शादी है

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

गाँधीनगर दिल्ली।

परमपूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से एवं डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी व मुनि जागृत कुमार जी के पावन सानिध्य में भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का प्रेरणादायी आयोजन संपन्न हुआ।

कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक एवं मंगलमय उच्चारण के साथ हुआ। कार्यशाला में डॉ. मुनिश्री अभिजीत कुमार जी ने अपनी अत्यंत सरल, सहज एवं प्रभावशाली प्रवचन शैली में आचार्य श्री भिक्षु के विचारों एवं दर्शन को समझाया।

उन्होंने उपस्थित समाज को प्रेरित करते हुए बताया कि महापुरुषों के विचार केवल जानने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें अपने जीवन के आचरण में उतारने के लिए होते हैं। उनके प्रेरणादायी उद्बोधन ने उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं को भिक्षु दर्शन को गहराई से समझने एवं आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। मुनि जागृत कुमार जी ने भी अपने प्रेरणादायी उद्बोधन द्वारा उपस्थित समाज को विशेष प्रेरणा प्रदान की तथा सभी को धर्म और दर्शन के अध्ययन के साथ-साथ उसके सिद्धांतों को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला में श्रावक-श्राविका समाज की लगभग 100 से 110 की उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही।

'विवेगे धम्म माहिये' प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी एवं मुनि पुनीत कुमार जी के पावन सानिध्य में 'विवेगे धम्म माहिये' क्विज प्रतियोगिता का

आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का मूल उद्देश्य गृहस्थ जीवन में दैनिक कार्यों को करते समय विवेक का जागरण एवं सजगता किस प्रकार रखी जाए। अध्यक्ष महिमा पटवारी ने सभी का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए कार्यक्रम के रूपरेखा की जानकारी प्रदान की। मुनि विनीत

कुमार जी ने उद्बोधन प्रदान किया कि इस प्रतियोगिता के प्रश्नोत्तर में बताई गई बातों को यदि हम अपने दैनिक जीवन में शामिल कर उनका विवेकपूर्ण पालन करें तो तो हम कई प्रकार कि अनावश्यक हिंसा से बच सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन सुमित्रा बरडिया ने किया।



युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

मुमुक्षु जहान बैताला की दीक्षा
स्वीकृति की घोषणा पर विशेष

धन्य - धन्य हैं जहान,
संयम का पथ हैं महान

● प्रदीप छाजेड़, बोरावड़ ●

धन्य - धन्य हैं जहान
संयम का पथ हैं महान
आत्मा का शुद्ध रूप है महान
परिवार पर कलश चढ़ाया महान
बोरावड़ का नाम रोशन किया महान
रो रो कर ज्ञानशाला जाने वाला था जहान
आज संयम पथ पर आरुढ़ होने वाला जहान
क्रिकेट का शोक रखने वाला था जहान
आज गुरु शरण पाने को उत्सुक जहान
परिवार ने घर लै जाने के नाना प्रयत्न किए
युवाचार्य श्री जी की शिक्षा से सभी विफल किए
उदित होने वाला निश्चित ही आगे अस्त होता
जहान की तरह आत्मसात वाला पस्त नहीं होता
जड़ चेतन दोनों पर शाश्वत नियम लागू होता
मोक्ष की भावना रखने वाला त्रस्त नहीं होता
आत्मा के स्वयंभू को सही से पहचाना
स्वयं की भावनाओं को सही से जाना
अपनी खुशी को कभी भी नहीं छोड़ा
24 महीने से प्रयास करना नहीं छोड़ा
कुछ सौभाग्यशाली की कर्म-तकदीर होती
मुमुक्षा में केन्द्रित परम सौभाग्यशाली होती
भद्रवा बदी द्वितीया (2) 30-8-2026 को दीक्षा घोषणा पाई
पौष शुक्ला दशमी (10) 18-1-2027 की दीक्षा स्वीकृति पाई
मन की ऊर्जा लक्ष्य पर केन्द्रित होती
संयम से आत्मा के प्रदीप को पाती

समर्पण की नजीर को सर्वस्व अर्पण कर दिया

● साध्वी जागृतयशा ●

भैक्षवगण के भव्य भास्कर रम्य है, प्रणम्य है।
ज्योतिचरण की हर विधि नम्य है अगम्य है॥
गणपाल ने रिछपाल खातिर मनोनयन जो है किया।
समर्पण की नजीर को सर्वस्व अर्पण कर दिया॥
नाम है महावीर धीर गंभीर निर्मल नीर ज्यो।
तान सुन गलतान होते सरगम बजे जब बीन ज्यों॥
ओज आहार महाप्रज्ञ से पा ओजस्विता बढ़ती गई।
वरदृहस्त महाश्रमण का वर्चस्विता फलती गई॥
उदितोदित तेजस्विता लख शीष श्रद्धा से झुक रहे है।
यशस्विता तपस्विता को लखदाद जन-जन दे रहे है॥
वर्धापना के पल सुहाने ज्वार भक्ति का प्रबल है।
सनाथ है यह संघ संघ के नाथ संबल और सबल है॥

युवराजा पाया है गण ने, पल-पल मंगल गाउं

● साध्वी चारुलता ●

वंदन इन पावन चरणों में, नित-नित शीश झुकाएं,
युवराजा पाया है गण ने, पल-पल मंगल गाउं
मलाणी पावन धरती का फूल संघ ने पाया,
महावीर ने संयम सौरभ से, शासन महाकाया,
गुरुवर ने श्रीमुख फरमाया, निश्चितता अब पाएं।
श्रद्धा सेवा विनम्रता से, सबके मन को जीता,
मंत्र मुग्ध हो जाते श्रोता, फिर भी घट है रीता,
संघ समर्पित, सेवा अर्पित, महर नजर में पाउं॥
महाप्रज्ञ के चरण शरण में, ज्ञान दीप जलाया,
गुरुवर की सेवा में तत्पर, महाश्रमण शीतल छाया,
जनम-जनम की पुण्याई फली है, धन्य-धन्य हो पाउं॥
लय - मैली चादर...

नई सर्जना युवराजा की, अनहद खुशियां छाई है

● साध्वी शीतलयशा ●

नई सर्जना युवराजा की, अनहद खुशियां छाई है
तेरापंथ संघ की गरिमा, शिखरों तक पहुंचाई है॥
मुख्य मुनि का अलंकरण दे, नेपाल धरा पर किया चयन
चार तीर्थ में पुलकन भरकर, तृप्त कर दिये सभी नयन
श्रेष्ठ श्रुताराधक बन करके, आगम का नित करे गमन
पंचामृत निष्ठायूत जीवन, मूरत सबको भाई है॥1॥
विनय, समर्पण, सहिष्णुता अरू, गुरु आज्ञा है लक्ष्य महान
अल्पकषायी, मितभावी है, संगायन का ले वरदान
गुरु की छत्रछांव बन करके, चरण युगल करते प्रस्थान
वीर-गोयम की जोड़ी मनहर, देख रहा है सकल जहान
महाश्रमणजी निश्चिन्त बने अब, गण को दी उंचाई है॥2॥
भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी सुखकर, महावीर का निर्वाचन
योगक्षेम वर्ष यह पावन, सीन दिखाया मन भावन
सभा सुधर्मा प्रमुदित प्रभुवर, पुलकित चंदेरी कण-कण
नीवें गहरी की गण नायक, हरा-भरा यह नंदन वन
श्वेत चदरिया स्वयं ओढ़कर, पट्टघर को ओढ़ाई है॥3॥

गुरु प्रकाशपुंज है

● मोहन भन्साली ●

गुरु दीप बनकर, हमें दीप से दीप जलाना सिखाता है॥
गुरु संस्कारक बनकर, हमें आदर्श जीवन जीना सिखाता है॥
गुरु आधार बनकर, हमें मुश्किलों से लड़ना सिखाता है॥
गुरु युगपुरुष बनकर, हमें शीर्ष ऊंचाईयों पर चढ़ना सिखाता है॥
गुरु मंत्रदाता बनकर, हमें संकल्प सिद्धी का आलोक दिखाता है॥
गुरु नाविक बनकर, हमें जीवन की नैया पार कराना सिखाता है॥
गुरु चित्रकार बनकर, हमें हमारे कौरे कागज में रंग भरना सिखाता है॥
गुरु कल्पनाकार बनकर, हमें हमारे सपने को साकार करना सिखाता है॥
गुरु बागवान बनकर, हमें हमारी बगिया को रंगीन बनाना सिखाता है॥

Dil Halka, Life Awesome: सिर्फ मैत्री की वाइब!

● अर्जुन मेडतवाल ●

मैत्री और क्षमा वह अमृत-सूत्र है, जो
आत्मा को वैर-विरोध के संताप से मुक्त
कर परम शांति की ओर ले जाता है।
भगवान महावीर का अमर उद्घोष—
'मितिमेसव्वभूएसु, वेरंमज्झंनकेणइ'
(समस्त प्राणियों के साथ मेरी मैत्री
है, किसी के साथ मेरा वैर नहीं है)
यह केवल एक धार्मिक सूत्र नहीं,
बल्कि आत्म-शांति एवं विश्व-कल्याण
के लिए जीवन जीने की सार्वभौमिक
कला है।
जीवन में क्यों जरूरी है मैत्री?
संसार में प्रत्येक प्राणी सुख
की खोज में है, किंतु सच्चा आनंद
भौतिक वस्तुओं में नहीं, अंतरात्मा
के सद्गुणों में निवास करता है। जहाँ
वैर और ईर्ष्या है, वहाँ अशांति है;
और जहाँ सौहार्द है, वहीं सुख है।
आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन

में मैत्री को मुख्य आधार बनाया। आचार्य
श्री महाप्रज्ञ के अनुसार
'शत्रुता का विस्तार कर कोई भी
व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता।'
१. मानसिक क्लेश
से मुक्ति : मैत्री मन
को हल्का, शांत और
तनावमुक्त रखती है।
२. भय का उन्मूलन
: जो सबका मित्र है, उसे
किसी से भय नहीं होता।
३. सामंजस्य व
कर्म-निर्जरा : मैत्री से
समाज संगठित रहता
है तथा अशुभ कर्मों की निर्जरा
होकर आत्मा का कल्याण होता है।
'जीव मात्र' से मैत्री का दर्शन:
भगवान महावीर ने मैत्री को केवल
मनुष्यों तक सीमित न रखकर 'जीव

मात्र' (सव्व भूएसु) तक विस्तृत किया:
१. आत्म-तुल्यता (आत्मोपम्य
दृष्टि): 'सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं
न मरिज्जिउं' — सभी जीव जीना चाहते
हैं, सबको अपना जीवन
प्रिय है।
२. पारस्परिक
निर्भरता: 'परस्परपग्रहो
जीवानाम्' — प्रकृति का
प्रत्येक जीव एक-दूसरे के
अस्तित्व के लिए आवश्यक
है। जीव-मैत्री ही पर्यावरण
संतुलन का मूल मंत्र है।
३. सक्रिय अहिंसा :
प्रत्येक प्राणी के प्रति मन, वचन और
काया से रक्षा का भाव रखना ही सच्ची
अहिंसा है।
मैत्री विकास के ४ व्यावहारिक
उपाय :

१. समता भाव: सुख-दुःख, लाभ-
हानि और मान-अपमान में मन को सम
रखना।
२. आग्रह का त्याग (अनेकांत
दृष्टि): 'केवल मैं ही सही हूँ'—इस
दुराग्रह को छोड़कर दूसरों के विचारों का
सम्मान करना।
३. परोपकार व निःस्वार्थ
सेवा : स्वार्थ से ऊपर उठकर जीव-
दया और सेवा भाव से जुड़ना।
४. सहनशीलता : दूसरों की भूलों पर
क्रोध करने के बजाय उन्हें विवेक और
करुणा से देखना।
मैत्री का प्राण : क्षमा-दर्शन
(मिच्छामि दुक्कडं)
मैत्री की नींव क्षमा पर टिकी है। क्षमा
दुर्बलता नहीं, बल्कि आत्मिक
सामर्थ्य है।
'खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा

खमंतु मे।'
(मैं समस्त जीवों को क्षमा करता हूँ
और सभी जीवों से क्षमा याचना करता
हूँ।)
१. क्षमा मांगना (लघुता): अहंकार
को गलाकर अपनी भूलों के लिए क्षमा
मांगना आत्मा को निर्मल बनाता है।
२. क्षमा करना (महानता) :
दूसरों के अनुचित व्यवहार को हृदय
से भुलाकर वैर की ग्रंथि न बांधना ही
वास्तविक क्षमा है।
निष्कर्ष : वर्तमान युग के वैचारिक
व भौतिक संघर्षों में भगवान महावीर
का मैत्री और क्षमा-दर्शन ही मानवता
को बचा सकता है। जब हम अहंकार
त्यागकर क्षमा को आभूषण बनाएंगे, तभी
सही अर्थों में कह सकेंगे—
'मिति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं
न केणइ'

मन का जुड़ाव हो तो चार पीढ़ियां भी प्रेम से रह सकती हैं साथ

कादिवली।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या शासन श्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में अभिनव कार्यशाला का आयोजन तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के तत्वावधान में किया गया। कादिवली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मीठालाल धाकड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया। साध्वी प्रियंवदा जी ने कार्यशाला का विषय 'Two Generation One Connection (दो अनुभव एक जुड़ाव)' पर उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा — पीढ़ी चाहे कोई भी हो, पर मन से

अभिनव कार्यशाला का आयोजन

मन का जुड़ाव होना आवश्यक है। हर पीढ़ी में समायानुसार रहन-सहन, खान-पान, भाषा, विनय, शिष्टाचार, व्यवहार में बदलाव आता रहा है और आता रहेगा, पर इस विशाल कार्यशाला में यह समझने का प्रयास करें कि सब कुछ में बदलाव आता रहा है और आता रहेगा पर मन के जुड़ाव में बदलाव न आये। पिता-पुत्र, माँ-बाप, बेटा-पोता, दादा-बेटा सब एक दूसरे की भावनाएं एवं चिंतन को समझने का प्रयास करें। जुड़ाव न होने के कई कारण हो सकते हैं। किसी के मन में अत्यधिक इच्छाएं हों, मन में वहम हो, हमदर्दी की कमी हो अथवा सहनशक्ति कम होती है तो एक दूसरे से मन का जुड़ाव हो नहीं सकता। साध्वी श्री जी ने आगे कहा — परस्परता के

लिए आवश्यक है कि अपना दृष्टिकोण सम्यक् रहे। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहित करते रहें। पिता अपने पुत्र को अथवा सास अपनी बहु के प्रति आत्मीयता एवं अपनत्व के भाव रखें। पुत्र, पोता अथवा बहु ये भी स्वयं के लिए सम्माननीय पिता, दादा एवं सास के अनुभवों को सुनें। पास में बैठकर बुजुर्गों के प्रति हमदर्दी एवं आत्मीयता से दिल को जोड़ें। कार्यशाला में मुख्य रूप से आमंत्रित चेन्नई से समागत प्रवक्ता अनिता चौपड़ा एवं बबीता चौपड़ा ने अपने दोनों महत्वपूर्ण सत्र में कहा — हर पीढ़ी के साथ अगर

मन का जुड़ाव होता है तो वहाँ सौहार्द, अपनत्व एवं सामंजस्य का प्रभुत्व रहता है। जहाँ एक दूसरे सदस्य के प्रति जुड़ाव रहता है तो वहाँ चार-चार पीढ़ियां भी साथ में प्रेमपूर्ण व्यवहार के साथ रह जाती हैं। चाहे आपकी पढ़ाई किसी भी शहर में चलती हो, आप कहीं भी किसी की ऑफिस में कार्यरत हों और व्यवसाय आपका देश-विदेश कहीं भी हो, पर परिवार से रिश्ता जोड़कर रखें। हर पीढ़ी से मिलजुलकर रहें। साध्वी प्रेरणाश्री जी, साध्वी मृदुयशा जी एवं साध्वी ऋद्धियशा जी ने दोनों वक्ताओं को अधिकाधिक विकास करने की एवं धर्मसंघ की गरिमा को बढ़ाने की प्रेरणा दी। आभार ज्ञापन आशीष श्रीश्रीमाल ने किया। कार्यक्रम का संचालन विनोद कोठारी ने किया।

संक्षिप्त खबर

नेत्रदान से रौशन होंगी जिंदगी

विजयनगर। नेत्रदान जागरूकता सेमिनार का आयोजन आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार एवं मुनि पुनीत कुमार जी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन, विजयनगर में किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा नेत्रदान के महत्व को जन-जन तक पहुंचाना रहा। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर के अध्यक्ष पवन बैद ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित समाजजनों का स्वागत करते हुए कहा कि नेत्रदान केवल एक दान नहीं, बल्कि किसी व्यक्ति के जीवन में प्रकाश लौटाने का महान माध्यम है। युवाओं को इस तरह के जनसेवा एवं जागरूकता अभियानों में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। सेमिनार के मुख्य वक्ता डॉ. प्रकाश जी छाजेड़ (दिव्या दृष्टि हॉस्पिटल) ने नेत्रदान से संबंधित महत्वपूर्ण चिकित्सकीय जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने नेत्रदान के महत्व को समझते हुए 'नेत्रदान—महादान' के संदेश को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर डॉ. प्रकाश जैन एवं डॉ. तारा जी का जैन पट्ट द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का समापन मंत्री कमलेश दक द्वारा सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए एवं नेत्रदान जागरूकता के संदेश को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने के संकल्प के साथ किया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **हावड़ा।** सरदारशहर निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी स्व. कनक कुमार - पुखराज नाहटा के सुपुत्र पवन - सुनीता नाहटा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक बीरेंद्र बोहरा एवं गगन दीप बैद ने मंगल मंत्रोच्चार एवं विधि-विधान के साथ सम्पूर्ण संस्कार सम्पन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

साउथ हावड़ा। जैसलमेर निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी श्रेयांश कुमार - साधना जैन के सुपौत्री एवं सौरभ - बंदना जैन के सुपुत्री का नामकरण संस्कार संस्कारक बजरंगलाल डागा एवं राकेश चौरड़िया ने जैन मंत्रोच्चार के साथ सम्पूर्ण संस्कार विधि को गरिमामय रूप से संपादित करवाया।

महावीर कुमारजी तेरापंथ धर्मसंघ के नवम युवाचार्य

लाडनू।

तेरापंथ धर्मसंघ की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सुदृढ़ मर्यादा, अनुशासन और एक गुरु के प्रति अनन्य आस्था है। इसी गौरवशाली परंपरा में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने संवत् 2083 आषाढ़ शुक्ल 13, दिनांक 27 जुलाई 2026 को जैन विश्व भारती, लाडनू में परम पूज्य आचार्यश्री भिक्षु के 301वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर मुनिश्री महावीर कुमारजी को तेरापंथ धर्मसंघ के नवम युवाचार्य पद पर मनोनीत कर संघ को एक नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की। युवाचार्य डॉ. श्री महावीर कुमारजी का जन्म संवत् 2045, ज्येष्ठ शुक्ला 5, दिनांक 19 जून 1988 को फलसूंद, राजस्थान में सवाई सिंह कोचर एवं छगनदेवी कोचर के घर हुआ। दिनांक 3 मार्च 2002 को जसोल में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से दीक्षा ग्रहण कर उन्होंने ज्ञान, विनय और साधना की दीर्घ यात्रा प्रारंभ की। युवाचार्य डॉ. श्री महावीर कुमारजी का साधनापथ अनेक उपलब्धियों से अलंकृत है। आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा 16 फरवरी 2012 को कुपोली ग्राम में उन्हें श्रेष्ठ श्रुतआराधक के रूप में सम्मानित किया गया तथा 5

अक्टूबर 2015 को विराटनगर, नेपाल में मुख्य मुनि अलंकरण प्रदान किया गया। 14 फरवरी 2016 को किशनगंज, बिहार में सिंघाड़पति तथा 4 जून 2016 को बरपथार, असम में मुख्य मुनि पद का दायित्व मिला। वर्ष 2022 में उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की और 16 अप्रैल 2023 को खरोद, गुजरात में बहुश्रुत परिषद के संयोजक का दायित्व

मर्यादा ही संघ की शक्ति

भी उन्हें प्राप्त हुआ। ये उपलब्धियां केवल व्यक्तिगत गौरव नहीं, बल्कि उनकी ज्ञान-साधना, संगठन क्षमता, विनम्रता और गुरु-निष्ठा का प्रमाण हैं। तेरापंथ की पहचान ही है—एक आचार्य, एक गुरु और एक विधान। आचार्यश्री भिक्षु ने जिस अनुशासन और मर्यादा की आधारशिला रखी, उसी परंपरा को आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, आचार्यश्री महाश्रमणजी और उनसे पूर्व के सभी आचार्यों ने अपनी साधना, पुरुषार्थ और नेतृत्व से पुष्ट किया है। युवाचार्य पद व्यक्ति का पद नहीं, बल्कि गुरु-परंपरा और संघ-व्यवस्था के प्रति उत्तरदायित्व का प्रतीक है।

युवाचार्य डॉ. श्री महावीर कुमारजी का मनोनयन भी इसी अखंड परंपरा की

कड़ी है। तेरापंथ में गुरु का इंगित ही साधक के लिए मार्गदर्शन है और मर्यादा ही संघ की शक्ति। जब संघ के प्रत्येक सदस्य की दृष्टि एक गुरु, एक विधान और एक अनुशासन पर केंद्रित रहती है, तब संगठन में एकता, समन्वय और आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।

युवाचार्य डॉ. श्री महावीर कुमारजी के रूप में तेरापंथ को ज्ञान, विनय, साधना और युवा ऊर्जा का सुंदर समन्वय प्राप्त हुआ है। उनका जीवन यह प्रेरणा देता है कि उपलब्धियों से अधिक महत्वपूर्ण है—गुरु के प्रति समर्पण, मर्यादा के प्रति निष्ठा और आत्म-विकास की निरंतर साधना। आचार्यश्री महाश्रमणजी की महती कृपा से प्राप्त यह दायित्व उनके लिए ही नहीं, पूरे तेरापंथ धर्मसंघ के लिए गौरव और विश्वास का विषय है। युवाचार्य डॉ. श्री महावीर कुमारजी का जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है—ज्ञान में गहराई, व्यवहार में विनय, साधना में दृढ़ता और संघ के प्रति पूर्ण समर्पण। आइए, हम तेरापंथ की इस अमूल्य मर्यादा को हृदय में धारण करते हुए एक स्वर में कहें—एक गुरु, एक विधान; यही तेरापंथ की पहचान, यही संघ की शान।

त्याग, संयम और क्रांति का नाम है आचार्य भिक्षु

उधना।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद उधना द्वारा सहयोगी शाखाओं—ते.यु.प. पांडेसरा, ते.यु.प. भेस्तान एवं ते.यु.प. लिम्बायत के संयुक्त तत्वावधान में 'भिक्षु दर्शन' प्रशिक्षण कार्यशाला का अत्यंत प्रेरणादायी एवं सफल आयोजन तेरापंथ भवन, उधना में संपन्न हुआ। यह कार्यशाला युगप्रधान आचार्यश्री

महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशा जी आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में आयोजित की गई। इस अवसर पर साध्वी श्री डॉ. परमयशाजी ने

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला

अपने सारगर्भित पाठ्य में तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक स्वामी भीखनजी (भिक्षु स्वामी) के जीवन-दर्शन, अप्रतिम त्याग, कठोर संयम एवं अद्वितीय धर्मक्रांति पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने उपस्थित

श्रावक समाज एवं युवाओं को भिक्षु स्वामी के उच्च आध्यात्मिक सिद्धांतों एवं मर्यादाओं को अपने व्यावहारिक जीवन में अंगीकार करने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वीश्री परमयशा जी के साथ-साथ साध्वी कुमुदप्रभा जी एवं साध्वी विनम्रयशा जी ने भी अपने ओजस्वी एवं प्रेरणादायी विचारों के माध्यम से भिक्षु दर्शन के गूढ़ तत्वों को सरल एवं जीवनोपयोगी शैली में प्रस्तुत किया। मंत्री कमलेश डांगी द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया।

ज्ञानशाला : विनय और संस्कार के बीज से भविष्य का वटवृक्ष

बाल्यावस्था के संस्कार जीवनभर साथ चलते हैं

गांधीनगर, बैंगलोर।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा निर्दिष्ट ज्ञानशाला दिवस का आयोजन साध्वी पावन प्रभाजी ठाणा 4 के सान्निध्य में गांधीनगर स्थित तेरापंथ सभा के तत्वावधान में आयोजित किया गया। साध्वीश्रीजी ने कहा ज्ञानशाला संस्कारों की जननी एवं बच्चों में संस्कारों को पुष्ट करने का एक सशक्त माध्यम है। साध्वी आत्मयशजी, साध्वी उन्नतयशजी, साध्वी रम्यप्रभाजी का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। भिक्षु स्वामी संबंधित विविध घटनाओं को नाटक के द्वारा प्रस्तुत किया गया। साध्वीश्रीजी ने कहा इस प्रकार की प्रस्तुति से बच्चों का ज्ञान भी बढ़ता है बच्चों का विकास होता है एवं उनको इतिहास संबंधित जानकारी भी प्राप्त होती है। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश

बाबेल ने पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया, महासभा उपाध्यक्ष प्रकाश लोढा आंचलिक ज्ञानशाला संयोजक विनोद कोठारी एवं सुरेश बरडिया ने ज्ञानशाला के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा बच्चों के लिए राखी बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन भी हुआ। अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित बाबेल, युवक परिषद अध्यक्ष विनोद कोठारी महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मीबोहरा, ज्ञानशाला जोन संयोजिका कोमल पोखरणा, टीना मांडोत, पदमा चोपड़ा, राखी खट्टेड, आदि के साथ लगभग 28 ज्ञानशालाओं से 300 ज्ञानार्थी एवं 60 प्रशिक्षिकाएं इस कार्यक्रम में उपस्थित थीं। सभा मंत्री सुभाष पोखरणा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया ने किया।

पौधे की तरह बच्चों में भी संस्कारों की सिंचाई जरूरी

टिदलागढ़।

ज्ञानशाला संयोजिका कृष्णा जैन ने सभी का स्वागत करते हुए कहा की जैसे एक पौधे की अच्छे से देखभाल की जाए तो वह सुगंधित फूल और फल हमें प्रदान करता है वैसे ही बचपन में बच्चों में अच्छे संस्कार डाले जाएं तो एक अच्छा नागरिक परिवार समाज और देश को मिलता है।

हमारे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासभा के उड़ीसा के आंचलिक प्रभारी छत्रपालजैन का स्थानीय सभा अध्यक्ष दीपक जैन ने दुपट्टा से सम्मान किया। मुख्य अतिथि महोदय छत्रपाल जैन ने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को रोकने के लिए आचार्य श्री तुलसी जी ने 1995 को बच्चों में सद संस्कार

के लिए ज्ञानशाला का शुभारंभ किया। छत्रपाल जी ने प्रशिक्षिका बहनों का निस्वार्थ भाव से ज्ञानशाला में सेवा देने के लिए बहुत-बहुत आभार एवं धन्यवाद किया। सभा के पूर्व अध्यक्ष गौतम जैन ने भी अपने विचार रखते हुए ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनों की बहुत प्रशंसा की। अभिभावक लोगों ने अपनी बात रखते हुए कहा कि ज्ञानशाला में बच्चों को त्याग प्रत्याख्यान करवाया जाता है एवं विभिन्न प्रतियोगिता के माध्यम से उनके व्यक्तित्व का विकास होता है हमारे बच्चे को ज्ञानशाला से अच्छे संस्कार के साथ-साथ और भी बहुत कुछ सीखने मिलता है। श्रेष्ठ दो विचारों को भी सम्मानित क पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रशिक्षिका डॉक्टर इतिश्री अग्रवाल ने किया।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्नेहगामिता रहे।

— आचार्य श्री महाश्रमण

(विकास महोत्सव)

युगप्रधान ने युगधारा को दिए नए अवदान

उधना।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयश जी के सान्निध्य में '33वां विकास महोत्सव' का समायोजन हुआ।

डॉ. साध्वी परमयश जी ने अपने व्यक्तित्व में कहा कि गुरुदेव तुलसी राष्ट्रसंत का उद्घोष था। इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान। उनकी मैत्री, विशुद्ध वैराग्य और करुणा ने देश के दिग्गजों को प्रभावित किया। नास्तिकों को आस्तिक बना दिया। उनके करिश्माई

व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके चरणों में आते जैन और अजैन, हिंदू-मुस्लिम, भक्त और अभक्त, सांसद और विधायक। अध्यात्म के शिखर पुरुष का हर पहलू दिव्य और भव्य था, जिसमें झलकती थी बुद्ध की करुणा, ईसा का प्रेम, गांधी का सत्याग्रह और महावीर का अहिंसा दर्शन। स्वप्नद्रष्टा गुरुदेव ने प्रगति के नए सितारे सजाए, संघ को Bright future दिया। उन्होंने कभी मनाया संयम वर्ष तो कभी अनुशासन वर्ष, कभी प्रेक्षा वर्ष तो कभी योगक्षेम वर्ष, कभी स्वाध्याय वर्ष तो कभी अणुव्रत

वर्ष, भिक्षु चेतना वर्ष। ऐसे थे अद्भुत अवधूत हमारे गुरुवर। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल ने मंगलाचरण से की। तेरापंथ सभा के सदस्यों ने 'वंदना नंदन तुलसी जगत में कमाल करग्यो' गीत का संगान किया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने 'शासन शेखर का जीवन है मनभावन' गीत का संगान अपनी सुमधुर स्वर-लहरियों के साथ किया। साध्वी विनम्रयश जी और साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने कविता के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। क्षमा लेना और देना हमारी संस्कृति

आचार्य तुलसी विकास के शलाका पुरुष, मानवता के मसीहा थे

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में 33वें विकास महोत्सव का भव्य आयोजन उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में आयोजित हुआ। इस अवसर पर विकास परिषद् के सदस्य बनेचंद मालू विशेष रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- आचार्य तुलसी विकास के शलाका पुरुष थे। वे मानवता के मसीहा व शांति के पैगम्बर थे। वे गति, प्रकाश व ऊर्जा के

पर्याय थे। जिनका मन सुनता था, आँखें बोलती थीं और वाणी देखती थी। वे दिव्य दृष्टि सम्पन्न सत्य की साधना और शोध में निरत रहने वाले एक तेजस्वी व्यक्तित्व थे। वे व्यापक सोच उदार दृष्टि कोण वाले जनप्रिय नेता थे। उनके आचार्य पद ग्रहण दिवस को वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ विकास महोत्सव के रूप में मनाता है। विकास महोत्सव की परिकल्पना आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने की। जिसकी स्वीकृति स्वयं गुरुदेव तुलसी ने प्रदान की। उन्होंने आगे कहा - विकास का मूल आधार 'आचार, अप्रमाद, अनुशासन व एक आचार्य का नेतृत्व' है। तेरापंथ विकास शील संघ है। अपने जन्म काल से लेकर आज तक वह

निरंतर विकास करता रहा है। आचार्य श्री तुलसी ने वर्तमान का मूल्यांकन किया और इसी कारण वे महान बने। आस्था, सम्यक् दृष्टिकोण, स्वाध्याय, ध्यान, मानसिक प्रसन्नता आदि विकास के सूत्र हैं। विकास का प्राण तत्व है - अनुशासन मर्यादा और व्यवस्था। आचार्य तुलसी ने शिक्षा, महिला जागरण, अणुव्रत आंदोलन, साहित्य, नया मोड़, श्रमण श्रेणी, उपासक श्रेणी, ज्ञानशाला आदि अनेक विकास के आयाम धर्मसंघ को प्रदान किया। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार ने सुमधुर गीत का संगान किया। स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष संदीप डागा ने दिया।

ज्ञानशाला ज्ञान का मंदिर व संस्कार शाला है

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में बृहत्तर कोलकाता स्तरीय ज्ञानशाला दिवस का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर महासभा के प्रधान न्यासी सुरेश गोयल आदि गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा, पूर्वांचल, दक्षिण कोलकाता, टॉलीगंज, बेहला, उत्तर कोलकाता, साल्टलेक, मध्य-उत्तर कोलकाता, लिलुआ, बाली-बेलुड, उत्तरपारा, हिन्दमोटर, रिषड़ा सभा क्षेत्र की ज्ञानशालाओं से लगभग 300 ज्ञानार्थी व 111 प्रशिक्षिकाएँ उपस्थित रही। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित

करते हुए 'ज्ञानशाला: संस्कारों के जागरण की शाला' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा - पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित बाल मन में आध्यात्मिक संस्कारों की कमी साफ परिलक्षित होती है। ऐसे वातावरण में बाल पीढ़ी को सुसंस्कारी बनाने के लिए आचार्य तुलसी ने ज्ञानशाला का महान उपक्रम दिया। जो निश्चित ही बाल पीढ़ी के लिए एक वरदान साबित हो रहा है। समय समय पर बाल पीढ़ी को अहिंसा, सत्य, मैत्री, सहिष्णुता आदि के संस्कार देने चाहिए। संस्कार जीवन की धरोहर व संपदा है। संस्कारों के अर्जन का समय बचपन है। बचपन बाल पीढ़ी को सुसंस्कारी व चरित्रवान बनाने के लिए ज्ञानशाला के लिए अभिप्रेरित करना चाहिए। 'ज्ञानशाला ज्ञान का मंदिर व

संस्कारों की पौध है।' ज्ञानशाला से बालकों के व्यक्तित्व में निखार आता है। अनेक प्रकार की कलाओं का विकास होता है। ज्ञानशाला सुसंस्कारशाला व चरित्रशाला बने। मुनि ने आगे कहा व्यक्ति के निर्माण में माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। बालक संस्कारी है तो घर परिवार में शांति रहेगी। हम जैन हैं, तेरापंथी हैं हमारी परंपरा व संस्कृति सुरक्षित रहे। देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था रखें। ज्ञानशाला महासभा का विशिष्ट प्रकल्प है। स्थानीय संस्थाएं प्रशिक्षिकाएं व व्यवस्थापक जिम्मेदारी पूर्वक कार्य कर रहे हैं। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण से हुआ।

आध्यात्मिक उल्लास का महा-उत्सव : पर्युषण पर्व की देशव्यापी तरंगें

सामायिक ऐसा उपक्रम जिससे होता है आत्मजागरण

बंगलुरु।

पर्युषण महापर्व में सामायिक दिवस श्रद्धा एवं आध्यात्मिक उल्लास के साथ मनाया गया। आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के सानिध्य में श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक तप की आराधना की।

साध्वी पावनप्रभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा चतुर्दशी है आज मुंह में अष्टमी चतुर्दशी पूर्णिमा एवं अमावस्या इन तिथियां को महत्वपूर्ण माना है। त्याग तप और जप के द्वारा आराधना करनी चाहिए, आचार्य भिक्षु ने मर्यादा पत्र लिखा।

चतुर्थ जयाचार्य ने मर्यादा पत्र का एक क्रम निश्चित किया। जिसे हम हाजरी कहते हैं। ढाई सौ वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने जो मर्यादा पत्र बनाई, आज तेरापंथ धर्म संघ मर्यादा अनुशासन सेवा और संगठन की मजबूत नींव पर खड़ा है। वर्तमान में आचार्य महाश्रमण जी के

अनुशासन में यह संघ अपनी गति प्रगति कर रहा है। भगवान महावीर के कई पूर्व भवों का वर्णन करते हुए कालजयी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। साध्वी उन्नतयशा जी ने उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर भगवान महावीर के सिद्धांतों में वर्णित आत्मवाद एवं पुनर्जन्मवाद का विश्लेषण किया। उन्होंने कहा कि कर्मों की गति अत्यंत बलवान होती है। व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगते हुए संसार में परिभ्रमण करता है तथा सुख-दुःख का अनुभव करता है। कर्मों से मुक्ति के लिए आत्मजागरण एवं साधना आवश्यक है।

साध्वी रम्यप्रभाजी ने सामायिक के महत्व को समझाते हुए कहा कि प्रत्येक श्रावक-श्राविकाओं को भाव सामायिक की आराधना करनी चाहिए। सामायिक ऐसा आध्यात्मिक उपक्रम है, जिसके माध्यम से व्यक्ति में समता, संयम एवं आत्मनिरीक्षण का विकास होता है। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री सुभाष पोखरणा ने किया।

जहां त्याग है वहां आत्म-संतोष, शक्ति और शांति है

दक्षिण मुंबई।

पर्वधिराज पर्युषण महापर्व के पावन अवसर पर आज अणुव्रत चेतना दिवस के रूप में धर्माराधना, आत्मचिंतन एवं संयम की प्रेरणा से जुड़ा आयोजन महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल, कालबादेवी में हुआ। अणुव्रत जीवन को मर्यादित, संयमित और नैतिक बनाने की प्रेरणा देता है। छोटे-छोटे संकल्पों के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासन, सदाचार और आत्मनियंत्रण को विकसित कर सकता है। अनुव्रत चेतना दिवस का उद्देश्य व्यक्ति को बाहरी आकर्षणों से ऊपर उठकर अपने आत्म अस्तित्व और आंतरिक शक्ति के प्रति जागरूक करना रहा। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी एवं शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी आदि साध्वीवृंद का सान्निध्य प्राप्त हुआ। साध्वीश्री ने पर्युषण महापर्व की साधना को जीवन में उतारने तथा व्रत एवं संयम के माध्यम से आत्मशुद्धि की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। शासन श्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा— श्रावक-

श्राविका के जीवन का आदर्श ही संयम की सार्थकता, इसे समझे बिना व्रत की, यानि त्याग की भावना जागृत नहीं होती। जहां त्याग है वहां आत्म-तोष है, शक्ति है, शान्ति है। शासन श्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा— भगवान महावीर, दो धर्मों को प्रतिष्ठित किया— आगार धर्म और अनगार धर्म। महाव्रती और अणुव्रती दोनों को भगवान महावीर ने एक दूसरे की पूर्णता बताया। इसी पूर्णता के साथ जैन शासन की प्रभावना हो रही है। अनादि अनन्त काल की परम्परा में, जैन शासन की प्रभावना में त्याग और व्रत को महत्त्व मिला है, भोग को नहीं। व्रत के द्वारा जीवन को बदला जा सकता है। साध्वी निर्भयप्रभा जी ने व्रत जीवन में क्यों आवश्यक है, सुन्दर प्रस्तुति दी। शासन श्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने केवल ज्ञान की महिमा को प्रस्तुत करते हुए मृगावती साध्वी के साथ घटित आश्चर्य का वर्णन किया। शासन श्री साध्वी मंजुरेखा जी ने भगवान पार्श्व के सातवें जन्म को व्याख्यायित करते हुए पूरी जनचेतना को भगवान पार्श्व, त्याग और संश्लेष को जोड़ जनता में त्याग के प्रति उत्साह जगाया।

महापर्व में अध्यात्म का नया नजारा

चेम्बूर।

तेरापंथ समाज में प्रथम बार अत्यंत नव्य वातावरण में महापर्व की आराधना की गई। ग्रांड नालंदा बैंक्वेट के दोनों सभागारों में प्रतिदिन उमड़ती भीड़ जनता के उत्साह एवं विश्वास की द्योतक रही। एक ही प्रांगण में करीब 10 घंटे लगातार व्याख्यानमाला व 500 से अधिक पौषध से एक कीर्तिमान ही बन गया।

खाद्य संयम दिवस - पर्युषण पर्व का आगाज नए अंदाज में हुआ। सैकड़ों भाई-बहनों ने द्रव्य संयम आदि का संकल्प लिया। 90 भाई-बहनों ने अट्टम तप व करीब 51 भाई-बहन अठाई व उससे आगे तप में जुड़े। विदुषी साध्वी निर्वाणश्रीजी ने भगवान महावीर के 'नयसार' के भव की व्याख्या के साथ अध्यात्म यात्रा का निरूपण किया। साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभा जी ने भगवान ऋषभ के पूर्वजन्मों की मार्मिक प्रस्तुति दी। साध्वी लावण्यप्रभाजी ने खाद्यसंयम

की महिमा बताई। साध्वी मधुरप्रभाजी ने विषय से संबद्ध गीत की प्रस्तुति दी।

स्वाध्याय दिवस - पर्युषण के द्वितीय दिन स्वाध्याय की प्रेरणा देते हुए विदुषी साध्वी निर्वाणश्रीजी ने भगवान महावीर के पूर्व जन्मों की अत्यंत भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

सामायिक दिवस - सामायिक पंचरंगी, अभिनव सामायिक आदि के साथ-साथ मुख्य प्रवचन में साध्वी निर्वाणश्री जी की सारगर्भित प्रस्तुति, साध्वी योगक्षेमप्रभाजी ने भगवान शान्तिनाथ चरित्र व 63 शलाका पुरुष व साध्वी मुदितप्रभाजी ने सामायिक व साध्वी कुंदनयशाजी ने गीत की प्रस्तुति दी।

वाणी संयम दिवस - वाणी के संयम की चर्चा करते हुए विदुषी साध्वी निर्वाणश्रीजी ने वाणी संयम क्यों करें, कैसे करें की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। साध्वी योगक्षेमप्रभाजी ने वर्तमान परिस्थिति में तीर्थंकरों के उपदेश की प्रासंगिकता बताते हुए भगवान शान्तिनाथ की जीवन झांकी प्रस्तुत की।

व्रतचेतना दिवस - साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने अव्रत का महासागर और व्रतों की नौका की प्रस्तुति के साथ भ. अरिष्टनेमि के पूर्व जन्मों की सरस प्रस्तुति दी। विदुषी साध्वी निर्वाणश्री जी ने भगवान महावीर के आध्यात्मिक आरोहण व बारह व्रतों के संदर्भ में विवेचन किया।

जप दिवस - कार्यक्रम का शुभारंभ विक्रोली महिला मंडल के गीत से हुआ। विदुषी साध्वी निर्वाणश्रीजी, साध्वी योगक्षेमप्रभाजी, साध्वी कुंदनयशाजी ने वक्तव्य की अभिव्यक्ति दी। ते. सभा मुंबई से अध्यक्ष सुरेन्द्र ने भाव प्रकट किए।

भगवती संवत्सरी - प्रातः 6:00 बजे से ही श्रद्धालुओं के बढ़ते सैलाब व आठ-प्रहरी पौषध के साथ श्रोताओं की उपस्थिति मनमोहक रही। नालंदा बैंक्वेट के दोनों तल जनता से आकर्षित रहे। एक-एक कर सभी साध्वीवृंद की प्रस्तुति से श्रोता करीब 10 घंटे तक जमे रहे।

विवेक और संयम के साथ कम बोलने से वाणी में आती है मधुरता

नोखा।

प्रवक्ता उपासक विनोद कुमार बोरदिया ने वाणी संयम के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अनावश्यक नहीं बोलना भी वाणी संयम का ही एक रूप है। व्यक्ति जब बोले, तो तोलकर, मृदु एवं विवेकपूर्ण वाणी बोले। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति विवेक और संयम के साथ कम बोलता है, उसकी वाणी में मधुरता आ जाती है। मौन की साधना से वचन सिद्धि संभव है। शरीर की सुंदरता नश्वर है, लेकिन आत्मा को पवित्र एवं

सुंदर बनाने का प्रयास करना आवश्यक है। सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र और संयम-तप की साधना ही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है तथा साधक को अपनी मंजिल तक पहुंचाती है। उपासक बोरदिया ने आचार्य श्री तुलसी की रोचक गीतिकाओं के माध्यम से श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया और धर्मसभा में आध्यात्मिक वातावरण बना दिया। इस अवसर पर उपासक रतनलाल मेहता ने जीवन जीने की कला पर प्रेरणादायी उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के जीवन में विलासिता और अहंकार का

प्रवेश नहीं होना चाहिए। व्यसनो से दूर रहकर गलत व्यवहार से बचना चाहिए। उन्होंने भगवान महावीर के जीवन एवं संदेशों का रोचक वर्णन करते हुए उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित किया। इसके पश्चात उन्होंने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग एवं कायोत्सर्ग करवाया।

इंद्रचंद बैद 'कवि' ने बताया कि निकाय चुनाव के मतदान दिवस होने के बावजूद लोगों में धर्म के प्रति गहरा आकर्षण बना रहा। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने धर्मसभा में उपस्थित होकर आराधना का लाभ लिया।

रत्नों में चिंतामणि, पर्वों में पर्युषण श्रेष्ठ

गंगाशहर।

साध्वी त्रिशलाकुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में पर्वधिराज पर्युषण महापर्व का शुभारम्भ हुआ। साध्वी रश्मिप्रभाजी 'खाद्य संयम दिवस' पर सारगर्भित विचारों की प्रस्तुति दी।

आओ जाने अपने चतुर्थ आचार्य जीतमलजी की 'पवित्र साधना' के विषय पर ओजस्वी वक्तव्य द्वारा नई गुर बताए। विशाल जनभेदनी को संबोधित

करते हुए साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने पर्युषण महापर्व की महत्ता को उजागर करते हुए कहा - हमारी भारतीय संस्कृति पर्वों और त्यौहारों की संस्कृति है। हर धर्म में अपने-2 पर्वों का महत्त्व होता है। मुस्लिम समाज में रमजान का महत्त्व है।

ईसाइयों के धर्म में क्रिसमस का त्यौहार बड़े धुमधाम से मनाया जाता है। वहीं बौद्धों में वैशाखी पर्व को बहुत ही उमंग के साथ मनाया जाता है।

जैनधर्म में भी अनेक पर्व मनाये जाते हैं लेकिन आज जिस पर्व को हम मना रहे हैं वह पर्व ही नहीं महापर्व है।

महर्षि गौतम ने बहुत ही सुन्दर कहा है- रत्नों में चिन्तामणि रत्न का महत्त्व है तो दान में अभयदान सर्वश्रेष्ठ है ध्यान में शुक्ल ध्यान की विशेष महिमा है ठीक पर्वों में महापर्व पर्युषण का विशेष महत्त्व है।

कार्यक्रम का सुन्दर संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया।

आध्यात्मिक उल्लास का महा-उत्सव : पर्युषण पर्व की देशव्यापी तरंगें

पर्युषण है संकल्प सिद्धि, आत्मदर्शन और आत्मानंद की ओर प्रस्थान

● प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा ●

तेरापंथ भवन, अमृत सभागार में प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में पर्युषण पर्यायना का भव्य आयोजन किया गया। खाद्य संगम दिवस प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- हर सम्प्रदाय अपनी परम्परानुसार भाद्रव माह में उत्सव मनाता है। इस माह में अध्यात्म के विकिरण स्वतः स्फूर्त होते हैं। पर्युषण जागरण और आत्मासाधना, आत्मदर्शन की प्रेरणा देता है। यह संकल्प सिद्धि पवित्रता का त्यौहार है। भौतिकता से हटकर आत्मा में निवास करना ही पर्युषण है। भगवती संवत्सरी के शुभागमन से पूर्व आठ दिनों का साधनाकाल महत्वपूर्ण है। हम उन महापुरुषों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने इस महापर्व को आठ दिन मनाने का सुचिन्तन किया। आत्माभिमुख बनने, अपनी त्रुटियों को मिटाने और वैमनस्य भाव से निवृत्त होने का पर्युषण पवित्र अवसर है। अहं से अहम् बनने और प्रदर्शन से आत्मदर्शन की दिशा में प्रस्थान करना पर्युषण की प्रेरणा है। आज स्थितियाँ ऐसी बन रही हैं, इन्द्रियां बाह्यदर्शन से प्रभावित हो रही हैं, अनेक समस्याएं पैदा हो रही हैं। जरूरत है व्यक्ति जिन्दगी रुपी गाड़ी से धर्म रुपी ड्राइवर को कभी उतारे नहीं। अपनी आत्मा को शुद्ध बनाएं। उपशान्त कषाय की साधना करें। महावीर वाणी का सार यही है मूर्च्छा, आसक्ति को कम करें और आत्म शक्ति को जगाएं। धर्म का सम्यक् आचरण करें।

आहार संयम के संदर्भ में साध्वी ने जैन जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा दी। साध्वी डॉ चेतन्यप्रभा जी ने खाद्य संयम पर रोचक प्रस्तुति दी। साध्वीवृन्द द्वारा “पर्युषण लाया अपने गार्डस” कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया एवं सहसंगान हुआ। रात्रिकालीन इतिहास के बोलते पृष्ठ के दौरान 'दिव्य ज्योति साध्वी दीपां जी' का प्रेरक जीवन का श्रावण प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने करवाया। मौली जीरावला ने संगान किया। संचालन साध्वीश्री सुदर्शनप्रभाजी ने किया।

रात्रिकालीन प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा 'श्रावक बादरमल जी भण्डारी' जीवन वृत्त सुनाया गया। सुश्री ऋषि चौपड़ा ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

सामायिक दिवस - पर्युषण पर्व के तीसरे दिन तेरापंथ परम्परानुसार परिषद के मध्य चतुर्दशी के अवसर पर मर्यादावली वाचन करते हुए साध्वीश्री मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- तेरापंथ के पूर्ववर्ती आचार्यों ने मर्यादा,

व्यवस्था अनुशासन की अखण्डता के लिए अखण्ड प्रयत्न किया है। एक गुरुनिष्ठ संघ में हम साधना कर रहे हैं यह हमारा परम सौभाग्य है। सम्पूर्ण श्रावक समाज को अपने सिद्धान्तों मर्यादाओं का ध्यान रहना चाहिए। संघ संवर्धन के लिए शक्ति का नियोजन करें।

सामायिक की प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- आप बाहरी परिवेश नहीं भीतर की कलुषता को कम करना सामायिक है। साम्यभाव बढ़ाएं।

वाणी संयम दिवस- साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने भगवान महावीर जीवन दर्शन विवेचन में मरीचि के भव पर प्रकाश डाला। श्रावक परिवार को सम्बोधित करते हुए कहा- महावीर को मानने वाले श्रावक समाज को महावीर की मानने की जरूरत है। घर परिवार के माहौल बिगड़ रहे हैं। भावी पीढ़ी मर्यादा अनुशासन में रहना नहीं चाहती। जरूरत है महावीर सिद्धान्त के समझने की। अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए जैनत्व सुरक्षित रखें।

जिंदगी मैं बुरे दिन आ जाए तो समझें ये दिन खराब हैं, जिन्दगी नहीं। जैन होने का सौभाग्य जन्म-जन्मान्तर की पुण्याई है। भगवान महावीर ने 'तिन्नाणं तारयाणं' का सूत्र दिया। समाज का कोई साधार्मिक धर्म से विचलित हो रहा है। उसे स्थिर करने का प्रयास करें। अपनी भावी पीढ़ी को जैन बनाएं।

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने कहा जीवन संवारने के लिए वाणी चिकित्सा आवश्यक है।

अणुवत चेतना दिवस- साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- आज भोगवादी संस्कृति बढ़ती जा रही है, ऐसी स्थिति में व्रतों का अंकुश आवश्यक है। सामाजिक कुरितियों को अपने घर से हटाने का प्रयास करें। व्रत चेतना वाले घरवाले नहीं, हौसले बुलंद रखते हैं। पुलपाटी, प्रीवेडिंग आदि शादी के अवसर पर शराब की बोटलें खुलना शोभनीय नहीं है। धिनौनी हरकतों पर ब्रेक लगाना चाहिए। पटवारियों का बास, हनुमानजी की पोल, बलदेव जी की पोल सितानियों का धोरा, कंसारों का बास, जैन छात्रावास, एरिया, मालियों का बास के गाई बहनों ने “युवराज-अभिनन्दन” गीत का संगान किया। साध्वीश्री राजुलप्रभाजी ने कहा व्रत स्वीकरण हमारा सुरक्षा कवच है। मंच

संचालन साध्वीश्री सुदर्शनप्रभाजी ने किया।

ध्यान दिवस- साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा आत्मशान्ति के लिए ध्यान महत्वपूर्ण आलम्बन है। महावीर की ध्यान साधना हमारे लिए आदर्श है। ध्यान के द्वारा चेतना आत्मोन्मुखी बनती है। महाप्रज्ञाजी द्वारा प्रदत्त प्रेक्षाध्यान प्रयोग व्यक्तित्व निखारता है। साध्वीवृन्द ने सहसंगान किया। साध्वीश्री राजुलप्रभाजी ने ध्यान की व्याख्या करते हुए कहा-शक्ति जागरण के अनेक प्रयोग ध्यान साधना में निहित हैं।

संवत्सरी महापर्व - प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- संवत्सरी जैनों का सिरमौर पर्व है। आज क्षमा का पंथ दिलाने वाले महापर्व की जरूरत है। इस पर्व के आलोक में साधक अपनी अन्तरात्मा का अवलोकन कर पवित्रता के पथ पर बढ़ने का संकल्प लेता है। सम्पूर्ण श्रावक समाज आत्म निरीक्षण कर पवित्र बनने की साधना करें। अतीत की खामियों को भूलकर शुभ भविष्य हेतु पवित्र संकल्प करें। प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी द्वारा “महासती चंदनबाला” का धाराप्रवाहिक मार्मिक चित्रण सुनकर सम्पूर्ण परिषद भावुक हुई। युवती बहनों ने मधुर संगान किया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने 'प्रभावक आचार्यों' का जीवनदर्शन प्रस्तुत किया। साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने गणधर, निहव परम्परा की यात्रा करवाई। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने तेरापंथ आचार्य परम्परा की अवगति दी। साध्वीश्री शौचप्रभाजी ने साध्वी प्रमुखाओं का जीवन दर्शन प्रस्तुत किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञाजी द्वारा रचित “आत्मा की पोथी पढ़ने का” गीत का संगान साध्वीवृन्द ने किया। सूरत सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों ने सामूहिक संगान कर वातावरण सौम्य बनाया।

पर्युषणकालीन अखण्ड जप में लोगों ने हजारों सामायिक की। साध्वीश्री की प्रेरणा से श्रावक-श्राविकाओं ने ग्यारह रंगी, सतरंगी, पचरंगी, धर्मचक्र, सिद्धितप आदि अनेक तपस्याएं की। 6 मासखमण सम्पन्न हुए, अभी भी मासखमण एवं अनेक प्रलम्ब तपस्याएँ जारी हैं। वर्षीतप एवं सावन, भाद्रव मासिक एकान्तर तप में भी सैकड़ों भाई बहन संलग्न हैं। बालोतरा में 6 वर्षीय चाहत संचेती ने आठ दिवसीय तप कर संघ एवं परिवार का नाम रोशन किया है। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी द्वारा प्रतिदिन प्रातः ‘जय जिनेन्द्र’ कार्यशाला निरन्तर आयोजित की जा रही है।

पर्युषण : आठ दिन, आठ संदेश, आत्म-विजय का पर्व

कटक।

तेरापंथ भवन में मुनि मोहजीत कुमार, मुनि जयेश कुमार और मुनि भव्य कुमार के सान्निध्य में आठ दिवसीय पर्युषण महापर्व का आयोजन हुआ।

दिवस 1: खाद्य संयम दिवस - मुनि मोहजीत कुमार ने बताया कि पर्युषण का अर्थ कषायों के उपशमन, भौतिक प्रवृत्तियों से अलगाव और आत्म-साधना से दिया कि भोजन का लक्ष्य स्वाद नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और साधना होना चाहिए। आहार का संयम ही शारीरिक और आध्यात्मिक साधना का मूल आधार है। इस दिन प्रभु ऋषभदेव के जीवन दर्शन पर भी विशेष प्रकाश डाला गया।

दिवस 2: स्वाध्याय दिवस - मुनि मोहजीत कुमार ने कहा कि स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय व दर्शनावरणीय कर्मों का क्षय होता है और नए विचारों का सृजन होता है। मुनि जयेश कुमार ने कहा कि सत्-शास्त्रों के पठन और अनुप्रेक्षा से कल्पनाशक्ति बढ़ती है तथा निष्क्रिय मस्तिष्क सक्रिय बनता है।

दिवस 3: सामायिक दिवस - मुनि भव्य कुमार ने अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया। मुनि मोहजीत कुमार ने सामायिक को संवर और शोधन की प्रक्रिया बताया, जिससे वीतरागता की दिशा में पहला कदम बढ़ता है। मुनि जयेश कुमार ने कहा कि शांत रहना ही संत होने की पहचान है और सामायिक जीवन को समतामय बनाने का कल्पप्रयोग है। सांझ को प्रभु सुमतिनाथ के जीवनवृत्त का चित्रण हुआ।

दिवस 4: वाणी संयम दिवस - मुनि मोहजीत कुमार ने वाणी की व्यक्तित्व का दर्पण बताते हुए कहा कि बोलना कला है पर मौन एक महान तप है।

मुनि जयेश कुमार ने कहा कि दूसरों को समझने के लिए सुनना और तोल-मोल कर बोलना आवश्यक है। मुनि भव्य कुमार

ने आगम सूत्रों के माध्यम से सामाजिक क्रियाकलापों के सुधार पर बल दिया।

दिवस 5 : व्रत चेतना दिवस - मुनि मोहजीत कुमार ने कहा कि व्रतों की आराधना से मनोबल और आत्मबल बढ़ता है। मुनि जयेश कुमार ने स्पष्ट किया कि इतिहास केवल त्यागियों का नाम याद रखता है, भोगियों का नहीं; त्याग और तप ही अमर बनते हैं। मुनि भव्य कुमार ने जनजीवन को व्रत की संस्कृति को आत्मसात् करने की प्रेरणा दी।

दिवस 6 : जप दिवस - मुनि मोहजीत कुमार ने 'जप' का अर्थ बताते हुए कहा कि 'ज' से जन्म का विच्छेद और 'प' से पापों का नाश होता है। मुनि जयेश कुमार ने कहा कि जब मंत्र में विधि, लय और सच्ची भावना का पुट मिलता है, तभी उसमें अपरिमित प्राणशक्ति का संचार होता है। इस अवसर पर भगवान अरिष्टनेमि के जीवन प्रसंग प्रस्तुत किए गए।

दिवस 7: ध्यान दिवस - मुनि मोहजीत कुमार ने प्रेक्षाध्यान के जरिए चित्त की निर्मलता और काया की स्थिरता पर जोर दिया। मुनि जयेश कुमार ने कहा कि आज के वैज्ञानिक युग में धर्म को प्रयोग और कसौटी पर कसने के लिए ध्यान के माध्यम से अंतर्जगत में जाना जरूरी है। इस दिन 50 से अधिक श्रद्धालुओं ने बड़ी तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

दिवस 8: संवत्सरी महापर्व - अंतिम दिन साढ़े आठ घंटे चले निरंतर प्रवचन क्रम में मुनि वृंदों ने आत्मचिंतन, संकल्प और संयम का संदेश दिया।

मुनि जयेश कुमार ने संवत्सरी को पूरे वर्ष का लेखा-जोखा बताते हुए तेरापंथ के 11 आचार्यों का संक्षिप्त जीवन वृत्त प्रस्तुत किया। मुनि मोहजीत कुमार ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का प्रभावी वर्णन किया।

इस महापर्व पर सैकड़ों उपवास, पौषध और उत्कृष्ट तपस्याएँ सम्पन्न हुईं।

AI Masterclass & Live Workshop का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

तेरापंथ युवक परिषद के सहयोग से Z-Pilot Academy द्वारा AI Masterclass + Live Workshop का सफल आयोजन किया गया। इसके पश्चात प्रतिभागियों को Artificial Intelligence की मूलभूत जानकारी, आधुनिक AI Tools तथा उनके व्यावहारिक उपयोग से परिचित कराया गया। कार्यशाला में Learn Build Showcase Launch की अवधारणा

के माध्यम से प्रतिभागियों को AI की संभावनाओं को समझाया गया तथा एक AI Assisted Project पर hands-on learning का अनुभव प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 20 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की, जिसमें: 13 किशोर मंडल के सदस्य 2 कन्या मंडल की सदस्य 5 तेयुप के सदस्य ने भाग लिया। यह कार्यक्रम तेयुप पूर्वांचल के अध्यक्ष सिद्धार्थ दुधेड़िया की एक विशेष पहल एवं संकल्प का परिणाम था। उनका उद्देश्य युवाओं को

आधुनिक तकनीक एवं AI से जोड़ते हुए उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना था। कार्यशाला का संचालन Z-Pilot Academy की Raka Chowdhury, Ex-Google Engineer एवं 15+ Years in Technology, द्वारा किया गया। तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल कोलकाता युवाओं के सर्वांगीण विकास एवं उन्हें बदलते समय की तकनीकों से जोड़ने के लिए निरंतर ऐसे नवीन एवं उपयोगी कार्यक्रम आयोजित करने हेतु प्रतिबद्ध है।

पृष्ठ 19 का शेष

आष्टांगिक साधना के...

पूज्य आचार्यश्री जैसे महान क्षमा के सागर के सामीप्य में हम भी अपने अंतःकरण को राग-द्वेष के भावों से मुक्त करने का प्रयास करें।

२. साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी : क्षमा के द्वारा उलझी हुई गाँवों को सुलझाया जा सकता है, जखमों को भरा जा सकता है और संबंधों को मधुर बनाया जा सकता है। क्षमा आत्मा का मूल स्वभाव है।

३. साध्वीवर्या श्री संबुद्धयश जी : सरलता और विनम्रता की धरती पर ही क्षमा के फूल उग सकते हैं। जीवन में सरलता को आत्मसात करके ही क्षमा का आदान-प्रदान संभव है। (तत्पश्चात साध्वीप्रमुखा जी, साध्वी वृंद, समणी वृंद व युवाचार्य श्री ने एक-दूसरे से एवं पूज्य आचार्यश्री से सविधि खमत-खामणा किए।)

संस्थाओं एवं चरित्रात्माओं द्वारा उद्गार व क्षमापना:

अणुव्रत समिति से शांतिलाल बैद, पारमार्थिक शिक्षण संस्था से बजरंग जैन, अमृतवाणी अध्यक्ष मदनचंद दूगड़, जैन विश्व भारती अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, जैन विश्व भारती संस्थान (यूनिवर्सिटी) के कुलपति बच्छराज दूगड़, आचार्य भिक्षु समाधि स्थल सिरियारी मंत्री मर्यादा कोठारी, तथा योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था

समिति लाडनूँ के अध्यक्ष प्रमोद बैद आदि ने अपने भक्तिभावपूर्ण विचार व्यक्त किए।

परस्पर खमत-खामणा एवं कार्यक्रम की संपन्नता :

१. चरित्रात्माओं व समाज का परस्पर खमत-खामणा : संत समुदाय की ओर से मुनि दिनेश कुमार जी ने साध्वी समुदाय से तथा साध्वी समुदाय की ओर से साध्वी जिन प्रभा जी ने संत समुदाय से खमत-खामणा किए।

२. श्रावक-श्राविका समाज : प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री निर्मल कोटेचा ने श्राविका समाज से तथा श्राविका समाज की ओर से कनक बरमेचा ने श्रावक समाज से खमत-खामणा किए। अंत में आचार्य श्री महाश्रमण जी के मंगल पाठ के साथ यह पावन क्षमापना पर्व सुसंपन्न हुआ।

जीवन की बस का...

अनादि काल से आत्मा के साथ लगा कामर्ण शरीर के केवल सिद्धावस्था में ही समाप्त होता है। हालाँकि, क्षायोपशमिक और क्षायिक भाव ऐसी आत्म-शक्तियाँ हैं जो कामर्ण शरीर को भी परास्त कर सकती हैं।

विनिवर्तना: प्रमाद से मन-वचन-काय को लौटाने की कला :

१. बालक और अग्नि का दृष्टांत : आगम प्रश्न का समाधान करते हुए

आचार्यश्री ने फरमाया कि विनिवर्तना का अर्थ है— जब इंद्रियाँ, मन, वचन और काय प्रमाद या सावद्यता (पाप-प्रवृत्ति) की ओर बढ़ने लगें तो उन्हें रोक देना। जैसे कोई छोटा बच्चा अग्नि की ओर बढ़ता है तो माता-पिता तुरंत उसे लौटा लेते हैं, ठीक उसी तरह आदमी या साधु को अपने मन, वचन और काय को पाप से पीछे हटा लेना चाहिए।

२. संवर और निर्जरा का लाभ : शास्त्रानुसार विनिवर्तना से जीव पाप कर्म न करने के लिए अभ्युत्थान करता है, जिससे नवीन कर्मों का 'संवर' होता है और पूर्व बद्ध कर्मों की 'निर्जरा' होती है। इसके पश्चात जीव चतुर्विध संसार-कांतार को पार कर जाता है।

३. कषायों पर नियंत्रण : मन में क्रोध, मान, माया या लोभ के भाव आएँ तो उनके प्रतिपक्षी आलंबन सूत्रों का स्मरण करना चाहिए। यदि एक साथ चारों पर नियंत्रण न हो सके तो एक-एक कर नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्य डालगणी के समाधि स्थल जाने का भाव :

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि भाद्रपद शुक्ला द्वादशी पर तेरापंथ के आठवें पट्टाचार्य परम पूज्य आचार्यश्री डालगणी जी का महाप्रयाण दिवस है उस दिन उनकी समाधि स्थल पर जाने का भाव है।

पृष्ठ 20 का शेष

कालूगणी की दिव्य...

पूज्यश्री ने भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा, गुरुदेव तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का भावपूर्ण स्मरण करते हुए अष्टम आचार्याधिपति के चरणों में अपना भावपूर्ण श्रद्धार्पण किया।

साध्वी प्रमुखा जी के उद्गार, तपस्या

का प्रत्याख्यान व पत्रिका लोकार्पण:

१. साध्वी प्रमुखा जी की अभिव्यक्ति : साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने प्रसंगवश आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी तथा आचार्यश्री कालूगणी से जुड़े प्रेरक संस्मरणों को सुधर्मा सभा के समक्ष प्रस्तुत किया।

२. तपस्या व साहित्य लोकार्पण

: कार्यक्रम के दौरान मुनि मर्यादाकुमार जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के मुखारविंद से ९ की तपस्या का प्रत्याख्यान (पचक्खण) ग्रहण किया। इसके साथ ही पाक्षिक पत्रिका 'भारतीय समाज' में धर्म अध्यात्म के विशेषांक का पूज्य आचार्यश्री के पावन कर-कमलों में भक्तिभाव से लोकार्पण किया गया।

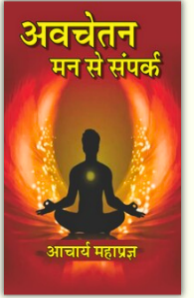
बोलती किताब

अवचेतन मन से सम्पर्क

आचार्य महाप्रज्ञ की चिंतन-दृष्टि में मन, भाव, ध्यान और आत्म-विकास का समन्वित विवेचन



आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक 'अवचेतन मन से सम्पर्क' मनुष्य के मन, भाव और चेतना के गहरे स्तरों को समझने का प्रयास करती है। इसमें मानसिक अशांति, असंतोष और नैतिक पतन के कारणों पर विचार करते हुए आंतरिक परिवर्तन का मार्ग बताया गया है। श्वास-प्रेक्षा, प्रेक्षाध्यान और अनुप्रेक्षा को मन एवं भावों के परिष्कार के प्रभावी साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक बौद्धिक विकास के साथ भावनात्मक विकास, मनोबल और चरित्र निर्माण के संतुलन पर बल देती है।



आचार्य महाप्रज्ञ के अनुसार केवल बाहरी सुख-सुविधाएँ मनुष्य को स्थायी शांति नहीं दे सकतीं। जीवन में शांति और संतोष के लिए कामनाओं का परिष्कार तथा आसक्ति और ममत्व से मुक्ति आवश्यक है। धर्म और साधना को इसी आंतरिक परिष्कार का माध्यम बताया गया है। श्वास के प्रति सजगता व्यक्ति को अपने भावों और प्रतिक्रियाओं को समझने में सहायता करती है। पुस्तक में ध्यान को केवल एकाग्रता का अभ्यास न मानकर जीवन को बदलने वाली प्रक्रिया बताया गया है। ध्यान, स्वाध्याय और अनुप्रेक्षा के समन्वय से मन, वाणी और शरीर के शोधन एवं परिष्कार की दिशा में आगे बढ़ने की बात कही गई है। प्रतिक्रियात्मक जीवन से ऊपर उठकर जागरूक और प्रतिक्रियामुक्त चेतना विकसित करना साधना का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

पुस्तक नैतिक और सामाजिक जीवन को भी आंतरिक चेतना से जोड़ती है। संवेदनशीलता, करुणा, मृदुता और सहिष्णुता के विकास से व्यक्ति के व्यवहार एवं संबंधों में सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है। इस प्रकार 'अवचेतन मन से सम्पर्क' व्यक्ति को अपने भीतर झाँकने, स्वयं को समझने और निरंतर अभ्यास के माध्यम से जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रेरणा देती है।

पुस्तक में कामना के परिष्कार को नैतिक जीवन की आधारशिला बताया गया है। अनियंत्रित इच्छाएँ मानसिक अशांति और असंतोष का कारण बन सकती हैं, जबकि उनके परिष्कार से जीवन में शांति और संतुलन विकसित होता है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए

अभी डाउनलोड करें

सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप



Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूँ

+91 87420 04849

books.jvbharati.org

books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

तुलसी के त्याग व....

विकास महोत्सव आधार पत्र, प्रशिक्षण व संघगान:

१. शिक्षण-प्रशिक्षण का दायित्व : आचार्यश्री ने नवदीक्षित साध्वियों को साध्वी प्रमुखाजी को, नवदीक्षित मुनिजी को मुनि नयकुमारजी को तथा नवदीक्षित समणीजी को साध्वीवर्याजी के निर्देशन में शिक्षण-प्रशिक्षण हेतु सौंपा।

२. आधार पत्र व उद्बोधन : पूज्यश्री ने विकास महोत्सव के आधार

पत्र का वाचन किया तथा स्व-रचित गीत का संगान किया। युवाचार्य श्री ने अतिसंक्षिप्त उद्बोधन में मर्यादा व विकास महोत्सव देने वाले आचार्यों की दूरदर्शिता को नमन किया।

३. समारोह का समापन : तेरापंथ महिला मंडल-लाडनूँ, साध्वी वृंद तथा विकास परिषद के संयोजक मांगीलाल सेठिया व सदस्य पद्मचंद पटावरी ने विचार व्यक्त किए। अंत में चतुर्विध धर्मसंघ द्वारा संघ गान के साथ समारोह सुसंपन्न हुआ।

❖ श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा। — आचार्य श्री महाश्रमण

पृष्ठ 2 का शेष

मर्यादा और एकांतवास से...

हमारे धर्मसंघ में भी कई ऐसे संत हुए हैं, जिन्होंने बहुत अच्छा जनसंपर्क किया है।

विविक्त शयनासन, चित्रों का विवेक और चारित्र सुरक्षा :

१. एकांतवास और प्रवास का विवेक: आगमिक प्रश्न का समाधान करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि विविक्त शयनासन या एकांतवास साधु के लिए अत्यंत उपयोगी है। साधु का रहने का स्थान सामान्यतया विविक्त यानी एकांत में हो जहाँ भिन्न लिंगी, पशु आदि न हों और न ही उनका आस-पास कोई प्रवास हो। गृहस्थों का बसता हुआ घर हो तो साधु को वहाँ अपना प्रवास करने से यथासंभव बचना चाहिए।

सात्विक निमित्त और तस्वीरों का प्रभाव : पूज्यश्री ने प्रवास स्थल के वातावरण पर गहरा प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रवास स्थल में भिन्न लिंगियों के फोटो भी नहीं होने चाहिए और यदि हों तो वे ढके (आवृत) होने

चाहिए। यदि चित्र हों तो भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, गुरुदेव तुलसी या नवकार मंत्र आदि के हों तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि आँखों के सामने धर्मात्माओं के चित्र आते हैं तो सात्विक-आध्यात्मिक भावों का संचार होता है। भिन्न लिंगी आदि के फोटो बार-बार दिखने से असम्यक् भाव पैदा होने के निमित्त बन सकते हैं।

२. नियम-मर्यादा और चारित्र गुप्त : शास्त्रोक्त संदर्भ देते हुए पूज्यश्री ने फरमाया कि विविक्त शयनासन से आदमी 'चारित्र गुप्त' को प्राप्त होता है और चारित्र की रक्षा होती है, क्योंकि निमित्त का अपना प्रभाव होता है। हमारे कई नियम, व्यवस्थाएँ और मर्यादावली इन्हीं निमित्तों से बचने के लिए बनाए गए हैं। संघ और संगठन में एकरूपता रखने के लिए नियमों का होना आवश्यक है। साधु-साधवियों को गुरुकाल में या बहिर्विहार में अपने स्थान व वातावरण के प्रति सदा जागरूक रहना चाहिए।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के प्रकाशनों के सदस्य बनें



₹ 1,200/-
(2 Years By Courier)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

<https://terapanthtimes.com/>

युवादृष्टि
inGenious
Yuva

₹ 2,000/-
(2 Years By Courier)

₹ 2,000/-
(2 Years By Courier)



<https://abtyp.org/prakashan>

A/C: AKHIL BHARTIYA TERAPANTH YUVAK PARISHAD, PUBLICATION
ACCOUNT NO: 492001000092 BANK NAME: ICICI BANK
BRANCH: LADNUN MICR CODE: 341022075 IFSC CODE: ICIC0004920

सम्पर्क सूत्र

सदस्यता, पत्रिका प्राप्ति संबंधित शिकायत एवं पते आदि में परिवर्तन हेतु

महेश परमार-प्रभारी, प्रकाशन
+91 98921 21205

गौतम बरड़िया-सहप्रभारी, प्रकाशन
+91 98921 25932

कुलदीप मारू-सहप्रभारी, प्रकाशन
+91 94136 29024

अधिक जानकारी के लिए
+91 89059 95001

अभातेयुप केन्द्रीय कार्यालय

Ladnuno@abtyp.org

॥मूलतः चिंतन नया विकास, युवकों में जागे विश्वास॥

तपोमय तेरापंथ - जहाँ हर कण में है साधना की गूँज

आयम्बिल से शारीरिक-मानसिक व्याधियां होती हैं शांत

बीकानेर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासन श्री साध्वी मंजू प्रभा जी के सान्निध्य में बीकानेर तुलसी साधना केंद्र में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार मे सामूहिक आयम्बिल का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल बीकानेर द्वारा किया गया।

साध्वी श्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा जैन धर्म में तपस्या को महत्व दिया गया है विभिन्न प्रकार के तप में एक तप है आयम्बिल तप आयम्बिल से

कर्म निर्जरा के साथ-साथ विघ्न बाधा निवारण, उपद्रवों की शांति, आध्यात्मिक शक्तियों का जागरण, शारीरिक मानसिक भावनात्मक व्याधियों का उपशमन भी होता है और लगातार आयम्बिल तपस्या के कारण द्वारिका नगरी की 12 वर्षों तक सुरक्षा होती रही।

श्रीपाल राजा का भयंकर कुष्ठ रोग भी इस तप के प्रभाव से ठीक हो गया राजा श्रेणिक व श्री कृष्ण की रानियां ने लंबे समय तक यह आयम्बिल तप किया था। महिला मंडल की लगभग 35 बहनों ने व एक भाईओ ने आयम्बिल किये।

आयंबिल तप से जागृत होती है आत्मचेतन

जयपुर।

आयोजन मुनि तत्त्व रुचि जी एवं मुनि संभव कुमार जी के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। मुनि श्री ने आयंबिल तप की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए फरमाया कि तप आत्मशुद्धि का मार्ग है। एक आयंबिल करने से 100 करोड़ वर्षों के पाप कर्मों का क्षय हो जाता है। सामूहिक आयंबिल के माध्यम से श्रावक-श्राविकाओं ने न केवल तप की आराधना की, बल्कि सामूहिक धर्मसाधना, एकता एवं आध्यात्मिक प्रेरणा का अनुपम अनुभव भी प्राप्त

किया। इस तप आयोजन में 3 भाइयों एवं 48 बहनों ने बड़े उत्साह के साथ सामूहिक आयंबिल तप किया।

जोड़े सहित एवं पूरे परिवार के साथ आयंबिल करने वाले तपस्वियों को प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मंडल की अध्यक्ष कौशल्या जैन एवं मंत्री पायल जैन ने सभी बहनों का स्वागत किया। पूरे कार्यक्रम में मंडल की बहनों का उत्साह, श्रम एवं अनुशासन सराहनीय रहा। अंत में अध्यक्ष कौशल्या जैन एवं मंत्री पायल जैन द्वारा सभी तपस्वियों के तप की अनुमोदना की गई।

तप परम औषधि है, तप से कर्म होते हैं क्षीण

चिक्कमगलुर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशजी ठाणा-4 के सान्निध्य में सतरंगी तप का तप अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें 1(उपवास) से लेकर 9 उपवास की तपस्या के 60 तपस्वियों ने भाग लिया। साध्वी पुण्ययशजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा-भगवान महावीर ने गौतम स्वामी की जिज्ञासा पर तप का प्रतिफल बताते हुए कहा तपस्वी पूर्व संचित कर्मों को क्षीण कर विशुद्धि को प्राप्त होता है! कपड़ा मलिन होता है तो व्यक्ति उसे साबुन से धोता है, सोने में मैल जम जाता है तो उसे आग में डाला जाता है, वैसे

ही आत्मा कर्म मल से मलिन हो जाती है तब साधक उसे तप की आग तपाता है। तप एक परम औषधि है। तपस्वी का आभामंडल विशेष तेजस्वी बन जाता है। अनेक दिव्य शक्तियां तपस्वी की चरणसेवी बन जाती हैं। तप से तन के रोग दूर होते हैं, मन के कल्मष, संताप क्षीण होते हैं। तप से कर्म शांत होने से ग्रहशांति भी होती है, ग्रहों का अशुभ फल मंद हो जाता है या नष्ट हो जाता है, हर दृष्टि से तप एक करणीय अनुष्ठान है। साध्वी विनीतयशजी ने अपने भावों की प्रस्तुति एक कविता के द्वारा दी। महिला मंडल की अध्यक्षा संतोषबाई गादिया एवं महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। पदम नाहर ने आभार ज्ञापन किया।

तप की ऊर्जा से काया कुन्दन बन जाती है

रोहिणी, नई दिल्ली।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में मासखमण तप अनुमोदन समारोह मनाया गया।

'शासनश्री' साध्वी सुमनश्री जी ने भगवान महावीर के पूर्व भवों की यात्रा के प्रसंग में बताया कि धार्मिक करणी का भौतिक सुखो के साथ सौदा करना निदान कहलाता है। निदान शल्य है कांटा है, जिसका फल बड़ा कटु होता है। इस निदान से भव परम्परा बढ़ जाती

है। भगवान महावीर की आत्मा ने 16 वें भव में निदान किया था वह इस त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में वन के राजा केशरी सिंह को मारकर पूरा किया।

हिंसा आखिर हिंसा ही होती है उस हिंसा से जो कर्म कालिमा लगती है उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है। साध्वी सुरेखा ने जप दिवस पर बोलते हुए कहा कि -जप और तप दो बहुत छोटे शब्द हैं किन्तु इसमें अध्यात्म का सार समा-हित है। जो जन्म-मृत्यु को विच्छेद करें और पाप कर्मों का नाश करें हर व्यक्ति के पास मनोबल मंत्रबल

और इष्टबल ये तीनबल अवश्य होने चाहिए। मंत्र शक्ति से पवित्र आभामंडल का निर्माण दुष्ट शक्तियों का निग्रह इष्ट शक्तियों का आह्वान और आधि व्याधि उपाधियों का निवारण हो सकता है।

नमस्कार महामन्त्र सब मन्त्रों का राजा है। इसका विधिवत शुद्ध उच्चारण के साथ स्मरण करने से हम शक्ति सम्पन्न बन जायेंगे। साध्वी मधुरलता ने मधुर गीत गाया। मासखमण तप में संलग्न पवन कुमार चौरडिया ने 28 की तपस्या का पचक्खाण लिया। संचालन रोहिणी सभा के मंत्री पराग जैन ने किया।

तप के लिए शरीर बल नहीं, मनोबल जरूरी

बालोतरा।

धर्म नगरी के अमृत सभागार में प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के बालोतरा चातुर्मास में अनेक तपस्या हुई उसी श्रृंखला में श्राविका संतोष भंडारी ने सिद्धि तप सम्पन्न का पचक्खाण किया। तप अनुमोदन समारोह में साध्वीश्री ने कहा- इस कठिन तप को बहन ने किया है, यह भी तप बड़ा विशाल है। बहन संतोष भंडारी के संकल्प बल को हम साधुवाद देते हैं। समुत्त और शान्त भाव के साथ वह सिद्धि तप के सोपान

पर चढ़ती रही और आज लक्ष्य के निकट है। साध्वीश्री ने कहा तप में शरीर बल की अपेक्षा मनोबल आवश्यक है। तप इन्द्रिय विजय कठिन साधना है, आत्मा की पवित्र अराधना है। कर्म निर्जरा के साथ स्वस्थता का महत्त्वपूर्ण मंत्र है। तप का उम्र से कोई तकीजा नहीं है। तप से आत्मा की सुरक्षा होती है। शक्ति का संवर्धन होता है। तपस्वी अपनी भावना से आगे बढ़ता है। पर पारस्परिक सहयोग अपेक्षित है। प्रेरणा देते हुए साध्वी श्री ने कहा-भंडारी परिवार को तप अनुमोदन में तप-संकल्पित होना चाहिए। साध्वी

सुदर्शन प्रभा, साध्वी चैतन्य प्रभा और साध्वी शौर्य प्रभा ने सामूहिक संगान करके तप की अनुमोदना की। तेरापंथ सभा मंत्री मोहन बाफना ने बहन संतोष को तप की बधाई देते हुए आध्यात्मिक मंगलकामना प्रेषित की। तेरापंथ सभा पूर्वाध्यक्ष महेन्द्र वेदमुथा ने साध्वी प्रमुखा श्री द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया। सभा अध्यक्ष राणमल फोला मेहता ने तप- अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा- 'तप से हो तप का अभिनन्दन' को बहुमान देते हुए अनेक भाई बहनों ने तप का संकल्प किया।

सामायिक में श्रावक जीता है मुनि जैसा जीवन

दक्षिण मुंबई।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ युवक परिषद दक्षिण मुंबई द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मंगलाचरण के माध्यम से वातावरण भक्तिमय एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत हो गया। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने निर्धारित समय में सामायिक साधना कर आत्मनिरीक्षण, संयम एवं आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में कदम बढ़ाया। सामायिक दिवस के अवसर पर साध्वीश्री ने अपने प्रवचन में सामायिक के आध्यात्मिक महत्व एवं जीवन में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने ससम्मान संविधान को व्याख्यायित किया, और उसके साथ स्वयं के जीवन को सौभाग्यशाली माना कि जैन शासन का गौरव है एक गुरु के नेतृत्व

में चरित्र की परिपालना। आपने आगे कहा कि आज पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में हमारा सामायिक दिवस है। सामायिक अनुष्ठान में समर्पित श्रावक एक मुहूर्त के लिए मुनि जैसा जीवन जीता हुआ सांसारिक कामों से उपरत हो जाता है। साध्वीश्री ने ठाण सूत्र के आधार पर अच्छेरो का वर्णन

सामायिक दिवस

सुनाया जो पूरे समाज के लिए सर्वथा विशिष्ट था। शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा - सामायिक यानि समता को प्रतिष्ठित करना, आप सभी जानते हैं कि समता के बिना, परिवार और समाज नहीं चल सकता यह शाश्वत सत्य है। इसके साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन में भी समता बहुत जरूरी है क्योंकि आज जितने भी अपराध हो रहे हैं वे ईगो के कारण बढ़ता

हुआ क्रोध इंसान की जिंदगी बिगाड़ देता है, जरूरी है क्रोध का शमन करें। साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्रीजी ने एक मधुर गीत के द्वारा पूरा माहौल आध्यात्मिक बना दिया। साध्वी चेलनाश्री जी ने सामायिक दिवस के उपलक्ष्य में सुन्दर प्रस्तुति दी। सामायिक दिवस का यह आयोजन उपस्थित सभी श्रद्धालुओं के लिए आत्मचिंतन, संयम और साधना की प्रेरणा लेकर आया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद से राष्ट्रीय सहमंत्री अंकुर लुणीया, प्रकाशन प्रभारी महेश परमार तथा ज़ोनल कॉर्डिनेटर कमलेश भंसाली की विशेष उपस्थिति रही। यह जानकारी दक्षिण मुंबई सभा मीडिया प्रभारी नितेश धाकड़ एवं तेरापंथ युवक परिषद दक्षिण मुंबई उपाध्यक्ष दर्शन डागलिया ने दी।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने चराचर सृष्टि से किया खमत-खामणा

आष्टांगिक साधना के शिखर पर फहराया वीतरागता का ध्वज, मैत्री के रंग में रंगा तेरापंथ : आचार्यश्री महाश्रमण

जब झुका श्रद्धा का मस्तक, छलका क्षमा का महासमुद्र : लाडनूँ में रचा गया अलौकिक इतिहास

लाडनूँ।

16 सितम्बर, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता, तीर्थंकर प्रभु महावीर के प्रतिनिधि, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में पर्वाधिराज पर्युषण के शिखर दिवस की मंगल आराधना के पश्चात बुधवार को 'क्षमापना पर्व' अगाध उल्लास, नम्रता व आध्यात्मिक गरिमा के साथ मनाया गया। प्रातः सुधर्मा सभा में सूर्योदय से पूर्व ही श्रावक-श्राविकाओं की विराट उपस्थिति के बीच महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी एवं युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी मंचासीन हुए। पूज्य आचार्यश्री द्वारा वृहद् मंगल पाठ के उच्चारण के साथ ही ऐतिहासिक क्षमापना कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

पूज्य आचार्यश्री का पावन पाथेय एवं ऐतिहासिक खमत-खामणा प्रसंग :

१. शिखर पर ध्वजारोहण सम 'क्षमापना': पावन पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि हमने पर्युषण पर्व की आष्टांगिक



आराधना की। कल भगवती संवत्सरी की आराधना हुई। आज का यह दिन मानो शिखर पर चढ़कर ध्वजारोहण करने का समय है। प्रतिक्रमण में ८४ लाख जीव योनियों से खमत-खामणा हो जाता है, परंतु जिनके साथ दैनिक व्यवहार व काम पड़ता है, उनसे यदि व्यावहारिक खमत-खामणा हो जाए तो जीवन का एक अध्याय पूरा हो जाता है।

२. युवाचार्य श्री व साध्वी प्रमुखा जी से बारंबार क्षमा याचना : पूज्यश्री ने अत्यंत विनम्र भाव से फरमाया— 'संघीय कार्य की दृष्टि से युवाचार्य श्री महावीर कुमार से सबसे ज्यादा निकटता से काम पड़ता रहता है। दिन-रात अनेक कार्य करवाने पड़ते हैं। इस दौरान कोई कटु

या जल्दबाजी में कुछ कह दिया हो और इन्हें अप्रिय लगा हो, तो युवाचार्य जी से हमारा बारंबार खमत-खामणा।' युवाचार्य श्री ने भी तत्क्षण पूज्यश्री को वंदन कर खमत-खामणा किए। इसी प्रकार साध्वी प्रमुखा जी एवं साध्वीवर्या जी से मीटिंग व कार्यों के दौरान हुई किसी भी अप्रियता हेतु पूज्यश्री ने बारंबार खमत-खामणा किए।

३. समस्त चराचर जगत से क्षमापना : आचार्यश्री ने गुरुकुलवास व बहिर्विहारी संतों, साध्वी समुदाय, समणी वृंद, मुमुक्षु भाई-बहनों, संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, प्रवास व्यवस्था समिति लाडनूँ, केंद्रीय संस्थाओं, कल्याण परिषद, जैन शासन के अन्य आचार्यों,

बात करने से ही बात बनती है!

युवाचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि आज का दिन व्यावहारिक (प्रेक्टिकल) रूप में निभाने का है। अक्सर हमारे आपसी संबंधों में अनबन हो जाती है, और समय पर क्षमा न मांगने से गलतफहमियां गहरी होती चली जाती हैं।

बात करने से बात बनती है : युवाचार्य श्री ने सम्प्रेषण का महत्व बताते हुए कहा— 'बात करने से संवाद होता है और समस्याएं सुलझ जाती हैं, जबकि चुप रहने से बातें (गलतफहमियां) बनती हैं।' अतः आज का यह पावन दिन उन सभी लोगों से खुलकर क्षमा मांगने और पुरानी कड़वाहट को मिटाने का है, जिनसे हमारे संबंध हैं।

अंतःकरण की शुद्धि का अवसर : अंत में युवाचार्य श्री ने कहा कि परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी जैसे 'क्षमा सागर' की पावन सन्निधि में हमें अपने अंतःकरण को राग-द्वेष की गांठों से मुक्त कर पूर्णतः स्वच्छ और निर्मल बनाना चाहिए।

जैनतर धर्मगुरुओं, गणमुक्त साधुओं, सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र के लोगों, कर्मचारियों तथा संपूर्ण चराचर जगत से भावपूर्ण खमत-खामणा किए।

युवाचार्य श्री, साध्वीप्रमुखा श्री, साध्वीवर्याजी के विचार :

१. युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी : आज का दिन व्यावहारिक (प्रेक्टिकल) रूप में खमत-खामणा करने का दिन है। (शेष पेज 16 पर)

दुश्मन से प्यार करो

जानिए आचार्य तुलसी ने इस कथन को अधूरा क्यों माना?

युवाचार्यश्री महावीर कुमार जी ने क्षमा और मैत्री के महत्व को समझाने के लिए एक अत्यंत प्रेरणादायक और रोचक प्रसंग साझा किया:

१. प्रसंग : युवाचार्य जी ने बताया कि एक बार एक ईसाई धर्म के प्रमुख व्यक्ति परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के सानिध्य में आए। उस व्यक्ति ने गर्व के साथ कहा कि उनके धर्मगुरु जीसस क्राइस्ट ने एक बहुत महान बात कही है कि 'अपने दुश्मनों से भी प्रेम करो'।

२. गुरुदेव तुलसी का उत्तर : इस पर गुरुदेव तुलसी ने उन्हें बहुत ही गहराई से उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि जीसस क्राइस्ट ने जो बात कही है, भगवान महावीर ने उससे भी कहीं अधिक महान बात कही है।

३. महावीर स्वामी का दर्शन : जब उस व्यक्ति ने उत्सुकता से पूछा कि वह क्या है, तो गुरुदेव ने समझाया कि भगवान महावीर कहते हैं कि 'दुश्मन किसी को मानो ही मत।'।

४. इसका निहितार्थ : युवाचार्य जी ने स्पष्ट किया कि जब हम किसी को अपना 'दुश्मन' मानते हैं तो नहीं हैं, तो नफरत, वैर या बदले की भावना का प्रश्न ही नहीं उठता। इस प्रकार, भगवान महावीर का चिंतन

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मिती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ।
(सभी जीवों को क्षमा करना) और 'मैत्री भाव पर आधारित है।

इस प्रसंग के माध्यम से उन्होंने संदेश दिया कि आज का दिन 'खमत-खामणा' का है, जो केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि अपने भीतर से राग-द्वेष की गांठों को खोलने का एक व्यावहारिक अवसर है ताकि हम आपसी संबंधों में मधुरता ला सकें।

पूज्यश्री ने 'विनिवर्तना से क्या मिलेगा?' पर दिया ओजस्वी पाथेय

जीवन की बस का ड्राइवर है 'कर्मण शरीर', आत्म-बल की ब्रेक से ही रुकेगा प्रमाद : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूँ।

21 सितम्बर, 2026

लाडनूँ स्थित जैन विश्व भारती में योगक्षेम वर्ष का सुदीर्घ प्रवास कर रहे जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सानिध्य में सुधर्मा सभा में आगम 'उत्तरज्झयणाणि' के २५वें अध्ययन पर आधारित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम आयोजित हुआ। पूज्य गुरुदेव ने चतुर्विध धर्मसंघ को निर्धारित विषय 'विनिवर्तना से क्या मिलेगा?' पर पावन पाथेय प्रदान करते हुए अंतर्मन को साधने और प्रमाद से दूर रहने के व्यावहारिक सूत्र दिए।

जीवन का संचालन और कर्मण शरीर: संस्कारों का भंडार:



जब मन और योग प्रमाद की ओर बढ़ने लगें, तब विवेक का अंकुश लगाकर उन्हें तुरंत रोक देना ही विनिवर्तना है

—आचार्यश्री महाश्रमण



से संस्कारों का प्रवाह चल रहा है। कर्मण शरीर इन संस्कारों का भंडार है, जहाँ से हमारे जीवन का संचालन होता है और इसी के कारण आदमी कभी भी क्रोध, अहंकार आदि के वश में आ जाता है। कर्मण शरीर मानो जीवन रूपी बस का ड्राइवर है।

३. कर्म के प्रभुत्व को क्षीण करने का मार्ग : चेतना पर कर्म का प्रभुत्व है, विशेषकर मोहनीय कर्म की जकड़न से चेतना को मुक्त कराना आवश्यक है।

(शेष पेज 16 पर)

जाट, ब्राह्मण, वैश्य और क्षत्रिय... गत्रों के खेत का वो अनोखा चक्रव्यूह!....

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने संयम और आत्म-नियंत्रण की 'विनिवर्तना' नीति को समझाने के लिए दृष्टांत प्रस्तुत किया:

१. अचानक आई परिस्थिति : एक किसान अपने खेत में अकेला काम कर रहा था। तभी चार लोग वहाँ आए और बिना अनुमति के गन्ने तोड़ने लगे और चोरी कर जाने कि तैयारी करने लगे, किसान ने देखा कि वे संख्या में चार हैं और वह अकेला; यदि वह उन चारों से एक साथ भिड़गा, तो हार निश्चित है।

२. रणनीति और संवाद (विवेक का प्रयोग) : किसान ने आवेश में आने के बजाय बुद्धि से काम लिया। उसने उनसे बातचीत की और उनकी पृष्ठभूमि पूछी। पता चला कि उनमें एक क्षत्रिय, एक ब्राह्मण, एक वैश्य (बनिया) और एक जाट था। किसान समझ गया कि इनकी एकजुटता को तोड़कर ही इन पर विजय पाई जा सकती है।

३. एक-एक कर नियंत्रण (कार्य कुशलता) : जाट को फुसलाना : किसान ने सबसे पहले अपने समाज के (जाट) व्यक्ति से कहा, 'तुम तो मेरे भाई जैसे हो, गन्ने चोरी क्यों कर रहे हो? चलो मेरी माँ के पास चलते हैं।' वह उसे प्रेम से फुसलाकर खेत से दूर ले गया और एक मजबूत पड़ से बांध दिया।

बाकी तीन पर नियंत्रण : इसी प्रकार, वह बारी-बारी से क्षत्रिय, ब्राह्मण और वैश्य के पास गया और उन्हें अलग-अलग तर्कों और बहानों से फुसलाकर दूर ले गया तथा अलग-अलग पेड़ों से बांध दिया।

पूर्ण सफलता : जब चारों की शक्ति बिखर गई और वे अकेले-अकेले किसान के नियंत्रण में आ गए, तो उसने उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया।

पावन संदेश एवं जीवन-सीख : आचार्यश्री महाश्रमण जी ने इस दृष्टांत का आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक सार समझाते हुए फरमाया:

एक-एक करके दुर्गुणों पर विजय : हमारे भीतर भी क्रोध, लोभ, मोह और वाचालता (अनावश्यक बोलना) जैसे कई 'प्रमाद' एक साथ सक्रिय हो सकते हैं। यदि हम सबको एक साथ नियंत्रित करने का प्रयास करेंगे, तो असफल हो सकते हैं। साधक को चाहिए कि वह पहले किसी एक मुख्य दुर्गुण (जैसे ज्यादा बोलने की आदत) को पकड़े और उसे नियंत्रित करे।

'विनिवर्तना' (लगाम खींचना) का महत्व : जैसे ही मन में कोई अवांछित प्रवृत्ति या बुरा विचार जागे, उसी क्षण विवेक की 'लगाम' खींच लेनी चाहिए और उस वृत्ति को अपने से तुरंत दूर हटा देना चाहिए।



'आचार्यश्री कालू: परम कृपालु' पर पावन पाथेय

'कालूगणी' की दिव्य दृष्टि का फल है 'तुलसी' और 'महाप्रज्ञ' जैसे महान आचार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री ने विक्रम संवत् 2092 से 2093 तक संघीय स्तर पर 'कालूगणी महाप्रयाण शताब्दी वर्ष' मनाने की ऐतिहासिक घोषणा की

लाडनू।

17 सितम्बर, 2026

पर्वधिराज पर्युषण की अष्टदिवसीय पावन आराधना एवं भगवती संवत्सरी-क्षमापना पर्व के अभूतपूर्व आयोजन के उपरान्त जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में अष्टम आचार्याधिपति श्रीमज्जयाचार्य की गौरवशाली परंपरा के वाहक परम कृपालु आचार्यश्री कालूगणी का महाप्रयाण दिवस अगाध श्रद्धा, भव्यता व आध्यात्मिक गरिमा के साथ मनाया गया।

'आचार्यश्री कालू: परम कृपालु' पर आगमिक विवेचन व ऐतिहासिक संस्मरण:

१. आन्तरिक जुड़ाव व वात्सल्य

रूप : निर्धारित विषय पर आलोक डालते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि आज भाद्रपद शुक्ला षष्ठी है—हमारे धर्मसंघ के ८वें आचार्यश्री कालूगणी प्रवर की महाप्रयाण की वार्षिक तिथि। परम पूज्य कालूगणी पंचम आचार्यश्री मधवा से दीक्षित हुए और उन्हें वीतराग कल्प मधवा गणी की सन्निधि में रहने का सौभाग्य मिला। उनके प्रति कालूगणी का गहरा आंतरिक जुड़ाव व विशेष श्रद्धा भाव था।

२. गुरुदेव तुलसी का निर्माण व २२ वर्ष की आयु में पट्टारोहण : पूज्यश्री ने फरमाया कि आचार्यश्री तुलसी कालूगणी के सुशिष्य थे और वे उनके एकमात्र गुरु थे, जिन्होंने उन्हें दीक्षित किया तथा अपना उत्तराधिकार सौंपा। गुरुदेव तुलसी लगभग



आचार्यश्री कालूगणी में माता का वात्सल्य और पिता का अनुशासन दोनों समाहित था। वे हमारे धर्मसंघ के परम कृपालु शास्ता थे

—आचार्यश्री महाश्रमण

११ वर्षों तक कालूगणी के सामीप्य में रहे। कालूगणी ने मात्र २२ वर्ष के युवा मुनि तुलसी को धर्मसंघ का दायित्व सौंपा, जो अत्यंत साहस और दूरदर्शिता का कार्य था। कालूगणी में माता और पिता दोनों का वात्सल्य व अनुशासन देखा जा सकता था। उनके द्वारा दीक्षित शिष्यों में आचार्यश्री तुलसी व मुनिश्री नथमलजी स्वामी (आगे चलकर महाप्रज्ञ जी) जैसे महान विद्वान संत हुए।

३. ६० वर्षों की जीवन यात्रा व गंगापुर का अंतिम चातुर्मास : कालूगणी का आचार्य काल लगभग

२७ वर्ष रहा। हरियाणा चातुर्मास व मालवा मर्यादा महोत्सव को छोड़कर वे अधिकांश समय राजस्थान में ही प्रवासित रहे। वि.सं. १९९३ में गंगापुर चातुर्मास के दौरान, स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी अपने अटूट मनोबल के साथ उन्होंने रंगभवन स्थान पर अपने उत्तराधिकारी का निर्णय दिया था।

'कालूगणी महाप्रयाण शताब्दी वर्ष' (वि.सं. २०९२-२०९३) की ऐतिहासिक घोषणा :

९ वर्ष पूर्व दूरगामी घोषणा: पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि आज आचार्यश्री कालूगणी के महाप्रयाण को ९० वर्ष पूर्ण हो गए हैं। इस पावन प्रसंग पर पूज्यश्री ने ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए घोषणा की: 'विक्रम संवत् २०९२ की भाद्रपद शुक्ला षष्ठी से विक्रम संवत् २०९३ की भाद्रपद शुक्ला षष्ठी (आज से ९ वर्ष बाद) तक पूरे धर्मसंघीय स्तर पर 'आचार्यश्री कालूगणी महाप्रयाण शताब्दी वर्ष' मनाया जाएगा।' (शेष पेज 16 पर)

कंबल, कड़ाके की ठंड और कालूगणी का आदेश!

(वात्सल्य की प्रतिमूर्ति : आचार्य श्री कालूगणी)

तेरापंथ धर्मसंघ के नवें शास्ता आचार्यश्री कालूगणी का जीवन कठोर अनुशासन के साथ-साथ अगाध वात्सल्य का अद्भुत प्रतीक था। पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उनके करुणा-भाव का एक हृदयस्पर्शी संस्मरण साझा किया।

लाडनू का प्रसंग : घटना लाडनू की है। नवदीक्षित मुनि नथमल जी (बाद में आचार्य महाप्रज्ञ, जिन्हें तब 'नत्थू' कहा जाता था) किसी कार्यवश श्रावक सूरजमल जी बैगानी के आवास पर गए हुए थे। उसी समय आचार्यश्री कालूगणी संतों के ठिकाने पर पधारे और आते ही पूछा— 'नत्थू कहाँ है?' जब पता चला कि वे बाहर गए हैं, तो आचार्य

श्री की दृष्टि उनके सामान पर गई। कड़ाके की ठंड के बावजूद मुनि नथमल जी का कंबल वहीं रखा हुआ था।

पिता जैसा वात्सल्य : बालक 'नत्थू' को बिना कंबल ठंड में गया देख आचार्य कालूगणी चिंतित हो उठे। उन्होंने तुरंत संतों (जैसे कोडामल जी स्वामी) को आदेश दिया— 'शीघ्र यह कंबल लेकर जाओ और नत्थू को ओढ़ाओ ताकि उसे ठंड न लगे।'

निष्कर्ष : यह प्रसंग दर्शाता है कि आचार्य कालूगणी विशाल संघ के नायक होने के साथ-साथ अपने शिष्यों के प्रति माता-पिता जैसी सूक्ष्म संवेदनशीलता और सुरक्षात्मक करुणा रखते थे।

जब गुरु डालगणी ने पूछा—'मेरा विकल्प कौन था?'

आचार्यश्री डालगणी के आचार्य पद पर चयन के समय जब उनका नाम तय हुआ, तब उन्होंने मगन मुनि जी से एक अत्यंत गंभीर और नीतिगत प्रश्न किया।

डालगणी जी : 'मगन जी! तुम लोगों ने मेरा नाम आचार्य पद के लिए कैसे निर्णित कर दिया? मैं तो न्यारा क्षेत्रों में विचर रहा था। इन वर्षों में गुरुकुल-वास में भी अधिक नहीं रहा, फिर मेरा नाम कैसे तय किया?'

मगन मुनि जी : 'गुरुदेव! संघ हित में जो सर्वथा योग्य थे, आप हमें योग्य लगे, इसलिए हमने आपका नाम निश्चित कर दिया।'

डालगणी जी : 'मगन जी! तुम लोगों ने तो निर्णय कर दिया, लेकिन यदि मैं इस प्रस्ताव को स्वीकार ही न करता तो क्या करते?'

मगन मुनि जी : 'नहीं गुरुदेव! हम आपको मनाते, आपके पैरों में पड़ते। हम 'डालिम' (डालगणी) को मनाते, डालिम देवता को मनाते।'

डालगणी जी : 'ठीक है, पर मान लो मैं तो भी नहीं मानता! फिर क्या करते?'

मगन मुनि जी : 'नहीं गुरुदेव, संघ की सेवा का काम था, हम आपको मनाकर ही रहते।'

जिद और नीति की गहरी बात: डालगणी जी भी संघ के दूरदर्शी आचार्य थे। वे मगन मुनि जी की मूल बात तक पहुँचना चाहते थे। उन्होंने मगन मुनि जी का पूँचा (हाथ) पकड़ लिया और बोले:

डालगणी जी : 'मगन जी! तुम मुझे कितनी बार भी मनाने की चेष्टा करते, पर

आखिर मेरे ऊपर तो मेरा ही अधिकार है न? यदि मैं बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करता, तो संघ के पास इसका अल्टरेनेटिव (विकल्प) क्या था? मुझे वो बताओ। मगन मुनि जी स्वभाव से अत्यंत गहरे, गंभीर और नीति-कुशल व्यक्ति थे। वे इस बात को आसानी से उजागर नहीं करना चाहते थे। लेकिन जब गुरु डालगणी ने हठपूर्वक उतर जाना चाहा, तब मगन मुनि जी को झुकना पड़ा।

अंतिम विकल्प का उद्घाटन:

मगन मुनि जी (विनम्र भाव से) : 'गुरुदेव! हमारा अंतिम प्रयास तो यही रहता कि हम आपको ही मनाएँ। परंतु यदि आप अंतिम रूप से भी पूर्णतः अस्वीकार ही कर देंगे... तो हमारे पास एक अंतिम विकल्प था।'

डालगणी जी : 'हाँ! वही बताओ, वह अंतिम विकल्प कौन था?'

मगन मुनि जी : 'गुरुदेव! हमारे पास अंतिम विकल्प था— 'छापर के कालू जी' (मुनि कालूगणी)।'

परिणाम: यह नाम सुनते ही आचार्य डालगणी ने मगन मुनि जी को जाने का संकेत दिया। कहा जाता है कि 'छापर के कालू जी' का यह नाम आचार्य डालगणी के मन-मस्तिष्क में गहराई से अंकित हो गया। उन्होंने मुनि कालू जी की योग्यता, गंभीरता और साधना परीक्षण किया और कालान्तर में उन्हीं कालूगणी (नवें आचार्य) को तेरापंथ धर्मसंघ का अपना उत्तराधिकारी चयनित किया।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

